अक्तूबर 2022

दादावाणी

Retail Price ₹ 15

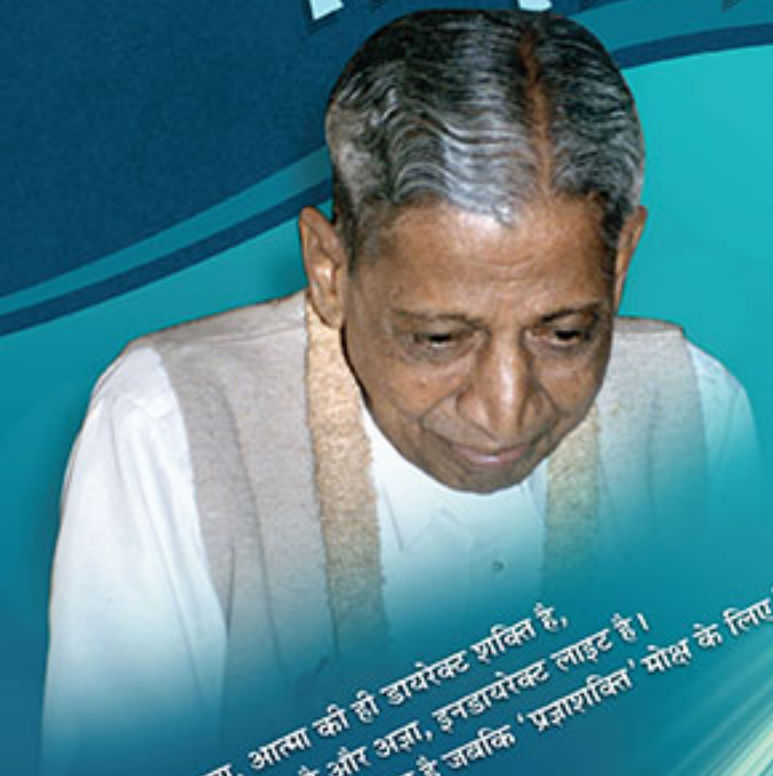

आत्मा

प्रज्ञा, आत्मा की ही डायरेक्ट शक्ति है,
डायरेक्ट लाइट है और अज्ञा, इनडायरेक्ट लाइट है।
अज्ञाशक्ति लोक-व्यवहार के लिए है जबकि 'प्रज्ञाशक्ति' मोक्ष के लिए है।

अज्ञाशक्ति प्रज्ञाशक्ति

अडालज : जनमाष्टमी महोत्सव : ता. 19 अगस्त 2022

अडालज : पर्युषण पारायण : ता. 23 से 31 अगस्त 2022

अडालज : सेवार्थी शिविर : ता. 4 सितम्बर 2022

वर्ष : 17 अंक : 12
अखंड क्रमांक : 204
अक्तूबर 2022
पृष्ठ - 28

Editor : Dimple Mehta
© 2022
Dada Bhagwan Foundation
All Rights Reserved.
Printed & Published by
Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj,
Dist.-Gandhinagar - 382421

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj,
Dist.-Gandhinagar - 382421

Printed at
Amba Offset
B-99, GIDC, Sector-25,
Gandhinagar – 382025.

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj,
Dist.-Gandhinagar - 382421

संपर्क सूत्र :
त्रिमंदिर, सीमंधर सिटी,
अहमदावाद-कलोल हाइ-वे,
पो.ओ.: **अडालज**,
जि.: गांधीनगर-382421.
फोन : 9328661166-77
email: dadavani@dadabhagwan.org
www.dadabhagwan.org
दादावाणी संबंधी शिकायत के लिए:
+91 8155007500

सबस्क्रिप्शन (सदस्यता शुल्क)
5 साल
भारत : 1000 रुपये
वार्षिक
भारत : 200 रुपये
भारत में D.D./M.O.
'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम से
संपर्कसूत्र के पते पर भेजें।

दादावाणी

अक्रम में आत्मा की प्रतिनिधि - 'प्रज्ञा'

संपादकीय

आत्मा की दो प्रकार की शक्तियाँ हैं : अज्ञाशक्ति और प्रज्ञाशक्ति। अज्ञाशक्ति का मूल क्या है? जड़ और चेतन के संयोग के दबाव से विशेष परिणाम उत्पन्न हुआ, वह अज्ञाशक्ति है। जिससे इस जगत् की अधिकरण क्रिया चलती है। जिससे कोई बाहर नहीं निकल सकता न! जबकि इस 'अक्रम मार्ग' में ज्ञानी पुरुष दादा भगवान (दादाश्री) की कृपा से, भेदविज्ञान द्वारा स्वरूप का ज्ञान मिलते ही 'खुद' 'अपने' भान में आता है तब अज्ञाशक्ति विदाई लेती है और प्रज्ञाशक्ति प्रकट होती है। प्रज्ञा, वह आत्मा की डायरेक्ट लाइट है और अज्ञा, वह इनडायरेक्ट लाइट है।

अक्रम में, आत्मा की प्रज्ञा नामक विशेष शक्ति बाहर निकलती है, जो रियल-रिलेटिव दोनों का संभाल लेती है, जिससे आत्मा को कुछ नहीं करना पड़ता। प्रज्ञाशक्ति, निरंतर सचेत करके चंदू को अलग रखकर, उसके दोष दिखाकर रियल की दिशा पकड़वाती है, वही आत्मा का अनुभव है! प्रज्ञा, वह मूल चेतन में से निकली हुई आत्मा की प्रतिनिधि है, जिसके पास आत्मा की 'पावर ऑफ एटर्नी' है।

ज्ञान मिलने के बाद महात्माओं को 'मैं शुद्धात्मा हूँ', यह विश्वास हो चुका है, प्रतीति बैठ गई है। थोड़ा सा अनुभव हुआ है, परंतु उस रूप नहीं हुए हैं। अभी भेद है। संपूर्ण शुद्धात्मा रूप हो जाने पर संपूर्ण अभेद हो जाता है। मूल आत्मा के साथ अभेद कौन होता है? अहंकार? नहीं। प्रज्ञा, मूल आत्मा के साथ अभेद होती है। प्रज्ञा व्यवहार पूरा करने के लिए मूल आत्मा में से निकली है, तो केवलज्ञान होने पर प्रज्ञा का काम समाप्त हो जाता है और वह आत्मा में अभेद हो जाती है!

प्रस्तुत अंक में, प्रज्ञाशक्ति का विशेष विश्लेषण हुआ है, जिसमें महात्माओं ने जिज्ञासावृत्ति से दादाश्री से प्रज्ञा संबंधी अनेक प्रश्न पूछे हैं। जिसमें प्रज्ञा से जुड़े हुए अलग-अलग शब्द जैसे कि दिव्यचक्षु, बुद्धि, सम्यक् बुद्धि, स्थितप्रज्ञ दशा, अहंकार, चित्त, श्रद्धा, सूझ, प्रतिष्ठित आत्मा, शुद्धात्मा, समझ, जागृति, ज्ञान और विज्ञान वगैरह के प्रज्ञा से डिफरन्स (अंतर) का सूक्ष्मता से दादाश्री की वाणी द्वारा यहाँ पर संकलन हुआ है।

दादाश्री कहते थे कि केवलज्ञान के अंश स्वरूप के भाग को हम प्रज्ञा कहते हैं। यह विज्ञान उन्होंने 'प्रज्ञाशक्ति' से देखा है। संसार में बुद्धि से देखा हुआ ज्ञान काम का है, परंतु अपने 'यहाँ' तो निर्मल ज्ञान चाहिए। अंत में, जब बुद्धि रहित विज्ञान होगा तब काम होगा। अत: सभी महात्मा ज्ञानी का योग मिलने के बाद पाँच आज्ञा का पालन करके प्रज्ञा और जागृति का बल बढ़ाकर इसी जन्म में संपूर्ण आत्मानुभव दशा पाएँ, ऐसी हृदयपूर्वक अभ्यर्थना।

- **जय सच्चिदानंद**

अक्रम में आत्मा की प्रतिनिधि - 'प्रज्ञा'

'दादावाणी' सामायिक में मुद्रित पाठ्य सामग्री मूलत: गुजराती 'दादावाणी' का हिन्दी रूपांतर है। कोष्ठक में दिए गए शब्द या तो अंग्रेज़ी शब्द का अर्थ हैं अथवा शब्द का तात्पर्य स्पष्ट करने हेतु वृद्धित किए गए वाक्यांश है। यहाँ पर 'आत्मा' शब्द को गुजराती और संस्कृत की तरह पुल्लिंग में प्रयोग किया गया है। जहाँ पर भी 'चंदूभाई' नाम का प्रयोग हुआ है, वहाँ पर पाठक खुद को समझें। 'दादावाणी' के इस अंक में अगर आप कोई बात न समझ पाएँ तो प्रत्यक्ष सत्संग में पधारकर समाधान प्राप्त करें। अनुवाद में कोई कमी नज़र आए तो हमें सूचित करने की कृपा करें, ताकि भविष्य में सुधार किया जा सकें। ऐसी क्षतियों के लिए हम आपके क्षमाप्रार्थी है।

संसार का मूल - अज्ञाशक्ति

प्रश्नकर्ता : (संसार में) पाप-पुण्य क्या है? इसे बनाने वाला कौन है?

दादाश्री : इसे बनाने वाली अज्ञा नामक शक्ति है। वह शक्ति अज्ञान से उत्पन्न हुई है। अज्ञान से अज्ञा नामक शक्ति उत्पन्न होती है। जीवमात्र में होती ही है अज्ञाशक्ति।

दो प्रकार की शक्तियाँ हैं। आत्मा का तो वैसे का वैसा ही स्वरूप है। जैनों में, वैष्णवों में, मज़दूरों में, सभी के आत्मा एक ही स्वरूप वाले हैं, लेकिन सिर्फ दो ही प्रकार की शक्तियाँ उत्पन्न होती हैं। अज्ञान के ही संयोग मिलें, तब अज्ञाशक्ति उत्पन्न होती हैं, उसे अज्ञानब्रह्म कहा जाता है। उससे जगत् का सर्जन होता है। यह अज्ञाशक्ति ठेठ तक संसार से बाहर ही नहीं निकलने देती। वह अनंत काल तक (अज्ञान है तब तक), पूरा संसारकाल पूर्ण होने तक, अज्ञाशक्ति ही सब चला लेती है।

'मैं' और 'मूर्ति' दोनों एक हो जाएँ, तब उसे अज्ञाशक्ति कहते हैं। संसार खड़ा करने वाली अज्ञाशक्ति है। अज्ञ संज्ञा-वह चोर्यासी लाख योनियों में भटकाने वाली चीज़ है। कार्यरूप में स्थित अज्ञ दशा से संसार खड़ा होता है और कार्यरूप में स्थित प्रज्ञा से संसार का विलय होता है। आत्मा प्राप्त करने के बाद बुद्धि का आधार टूट जाता है और प्रज्ञाधारी बनते हैं। जब ज्ञान टॉप पर आए, तब प्रज्ञाधारी कहलाते हैं, आत्मज्ञान डायरेक्ट हमारे द्वारा मिलता है!

यह 'अज्ञा' शब्द हमारे भीतर से स्फुरित हुआ है, हमने नया शब्द डाला है। यह तो प्रज्ञा को समझाने के लिए अज्ञा शब्द रखना पड़ा, क्योंकि प्रज्ञा को समझने वाला ही अज्ञा को जान सकता है। क्रमिक मार्ग में जहाँ पर अहंकार को शुद्ध करते-करते आगे बढ़ना है, वहाँ सब मन से करना पड़ता है, और इस अक्रम मार्ग में प्रज्ञादशा से सब होता है, सबकुछ आत्मा के प्रज्ञा भाग से होता है। अज्ञा भाग से प्रवेश हुआ और छुटकारा प्रज्ञा भाग से होता है। यह तो कौन से भाग से प्रवेश पाया, वह समझ में आए तो छूटने का मार्ग मिलता जाता है। जो शक्ति तुझे संसार में ठोकरें खिलाती है उसे पहचान, तो प्रज्ञाशक्ति पहचानी जा सकेगी।

बंधन अज्ञा से, मुक्ति प्रज्ञा से

प्रश्नकर्ता : अज्ञाशक्ति की शुरुआत क्यों हुई, उसके पीछे क्या हेतु था?

दादाश्री : मूल आत्मा और उसे इस जड़ का संयोग प्राप्त हुआ, चेतन के साथ जड़ का संयोग हुआ, उस संयोग से विशेष ज्ञान उत्पन्न हुआ। वही है अज्ञाशक्ति।

अज्ञाशक्ति किस तरह से उत्पन्न होती है? आत्मा पर संयोगों का ज़बरदस्त दबाव आ गया, इसलिए फिर जो ज्ञान-दर्शन स्वाभाविक था, वह विभाविक हो गया, उससे अज्ञाशक्ति उत्पन्न हो गई। यह अज्ञाशक्ति मूल आत्मा की कल्पशक्ति में से उत्पन्न होती है। अज्ञाशक्ति, आत्मा की कल्पना है, विकल्प है। जैसी कल्पना करता है,

वैसा ही शरीर बन जाता है। उसे कुछ भी मेहनत नहीं करनी पड़ती। उसके बाद 'इगोइज़म' साथ में ही रहता है। पुराना 'इगोइज़म' खत्म नहीं हुआ हो, उससे पहले तो नया 'इगोइज़म' शुरू हो जाता है। इस देह में टकराव करती रहती है, वह अज्ञाशक्ति है।

अज्ञा-प्रज्ञा दोनों आत्मा की शक्तियाँ

अज्ञाशक्ति से जगत् की अधिकरण क्रिया चलती रहती है और क्रमिक मार्ग में वह ठेठ तक रहती है और अंत में जब प्रज्ञाशक्ति उत्पन्न होती है तब अज्ञाशक्ति विदाई ले लेती है और वह प्रज्ञा ही ठेठ मोक्ष तक ले जाती है। यहाँ अक्रम मार्ग में ज्ञान मिलते ही प्रज्ञा उत्पन्न हो जाती है। फिर आपको कुछ भी नहीं करना पड़ता, प्रज्ञा ही काम करती रहती है। यह प्रज्ञा किससे उत्पन्न होती है? साइन्टिफिक सरकमस्टेन्शियल एविडेन्स के आधार पर! और अगर वैसे एविडेन्स उत्पन्न हो जाएँ तो सिद्ध भगवान में भी प्रज्ञा उत्पन्न हो जाए, लेकिन वहाँ ऐसे एविडेन्स उत्पन्न होते ही नहीं। और यहाँ तो समसरण मार्ग है इसलिए निरंतर संयोगों के धक्के से अज्ञाशक्ति उत्पन्न होती है और यदि 'ज्ञानी पुरुष' का योग मिल जाए तो प्रज्ञाशक्ति उत्पन्न हो जाती है और अज्ञाशक्ति विदाई ले लेती है।

प्रज्ञा, आत्मा की ही डायरेक्ट शक्ति है, डायरेक्ट लाइट है और अज्ञा, इनडायरेक्ट लाइट है। अज्ञा, वह टॉप पर पहुँची हुई बुद्धि कहलाती है या फिर छोटी से छोटी बुद्धि से लेकर भी... वह सारी अज्ञा ही है। इसके बावजूद भी वह आत्मा की शक्ति है। अज्ञाशक्ति आत्मा की शक्ति है और प्रज्ञा, वह भी आत्मा की शक्ति है।

प्रश्नकर्ता : उस शक्ति को आत्मा की शक्ति कैसे मानेंगे?

दादाश्री : विशेष परिणाम की वजह से अज्ञाशक्ति उत्पन्न हो गई है।

प्रश्नकर्ता : दादा, ऐसा नहीं है कि शक्ति एक ही है। यदि बाहर गई तो अज्ञा में परिणामित होती है और खुद में समा जाए तो...

दादाश्री : नहीं, ऐसा नहीं है। वह अज्ञाशक्ति अलग ही है। लेकिन वे दोनों ही आत्मा की शक्तियाँ हैं। जबकि *पुद्गल* में ऐसी कोई शक्ति है ही नहीं न!

प्रश्नकर्ता : तो उसका अर्थ यह है कि ये जो सभी शक्तियाँ हैं, वे सभी आत्मा की ही शक्तियाँ हैं?

दादाश्री : आत्मा की ही शक्तियाँ हैं, लेकिन जब तक आत्मा विशेष परिणाम में फँसा हुआ है तब तक अज्ञाशक्ति से बाहर नहीं निकल सकता न! जब अज्ञाशक्ति में से बाहर निकलता है, 'खुद' 'अपने' भान में आता है, तब अज्ञाशक्ति हट जाती है, तब निज परिणाम उत्पन्न होता है। उसके बाद प्रज्ञाशक्ति काम करती है। फिर वह संसार में नहीं जाने देती।

अत: दोनों शक्तियाँ आत्मा की ही हैं। बाकी कोई बाहर की, अन्य किसी की शक्ति है ही नहीं इसमें। वह प्रज्ञाशक्ति और अज्ञाशक्ति दोनों मानी हुई चीज़ें हैं, बिलीफ हैं।

अज्ञाशक्ति लोक-व्यवहार के लिए है जबकि 'प्रज्ञाशक्ति' मोक्ष के लिए है। यह प्रज्ञाशक्ति ही आपको मोक्ष में ले जाएगी। इसमें आत्मा तो वही का वही है। वहाँ पर भी वीतराग है और यहाँ पर भी वीतराग है। मात्र ये शक्तियाँ ही सब कार्य करती रहती हैं। जिस तरह पराए संयोगों के दबाव से अज्ञान होते-होते, अज्ञान पद उत्पन्न हो गया था, उसी तरह अन्य दबाव से (ज्ञानी पुरुष के निमित्त से) ज्ञान पद उत्पन्न हो गया।

ज्ञानी के भेदज्ञान से प्रकट हुई प्रज्ञा

हम जब ज्ञान देते हैं, तब सीधी अनुभूति ही हो जाती है, उसे परमार्थ समकित कहते हैं। इससे आपको उसी समय प्रज्ञा भाव उत्पन्न हो जाता है। सारा संसार जो चल रहा है, वह सब चंचल भाग है, जबकि प्रज्ञाभाव वह स्थायी रह सके, ऐसा भाव है। जब प्रज्ञा उत्पन्न हो जाती है, तब सीढ़ियाँ नहीं चढ़नी पड़ती लेकिन सीधे ही ऊपर पहुँच जाते हैं। प्रज्ञा के अलावा सारे भाव जो हैं, वे भावाभाव माने जाते हैं और वे सभी चंचल भाग में आते हैं। प्रज्ञाभाव को आत्मभाव नहीं कह सकते। प्रज्ञाभाव अचंचल भाग में आता है।

प्रज्ञा, वह अज्ञान के संयोगों का वियोग करवाकर विसर्जन करवाती है और निरंतर मोक्ष की तरफ, मुक्ति की तरफ प्रयाण करवाती है। 'ज्ञानी पुरुष' से मिले बिना प्रज्ञा उत्पन्न हो ही नहीं सकती।

ज्ञानी पुरुष जब इगोइज़म निकाल देते हैं, उसके बाद प्रज्ञा उत्पन्न होती है। इगोइज़म और ममता, वे अज्ञाशक्ति की देख-भाल में हैं। जब प्रज्ञा उत्पन्न होती है तब अज्ञा नाम की शक्ति अपना सबकुछ समेटकर, झाड़-बुहारकर जाने लगती है! जैसे कांग्रेस गवर्मेन्ट के आने पर सभी अंग्रेज चले गए थे न! अज्ञा के जाने पर प्रज्ञा उत्पन्न होती है। जगत् के जीवमात्र में जब तक मिथ्यात्व है, तब तक अज्ञा है और मिथ्यात्व चला जाए, तब प्रज्ञा उत्पन्न होती है। 'मैं चंदू भाई हूँ' वह मिथ्यादर्शन है। वह खत्म हो जाए और 'मैं शुद्धात्मा हूँ' का *लक्ष* (जागृति) बैठे, वह सम्यक् दर्शन है!

दादा कृपा से बैठी प्रतीति

प्रश्नकर्ता : यह जो दर्शन में आता है, वह दर्शन प्रज्ञा का गुण है या बुद्धि का? दर्शन किसका कहलाएगा?

दादाश्री : वह तो, प्रज्ञा को भी दिखाने वाली चीज़ है। दर्शन अर्थात् यह प्रतीति कि हम आत्मा हैं। पहले उसकी प्रतीति बैठनी चाहिए और प्रतीति बैठने के बाद वह प्राप्त होता है।

प्रश्नकर्ता : वह प्रतीति किसे, प्रज्ञा को होती है?

दादाश्री : प्रतीति अहंकार को होती है कि 'मैं वास्तव में यह नहीं हूँ, यह हूँ'। अहंकार को जो प्रतीति थी कि 'मैं चंदूभाई हूँ', तो वह प्रतीति वहाँ से उठकर यहाँ पर बैठ गई, उसी को दर्शन कहते हैं।

प्रश्नकर्ता : क्या वह प्रतीति प्रज्ञा की वजह से है? वह प्रतीति प्रज्ञा करवाती है?

दादाश्री : नहीं, प्रज्ञा नहीं करवाती। मैं यह जो ज्ञान देता हूँ, वह करवाता है और दादा भगवान की कृपा करवाती है। मैं ज्ञान देता हूँ और दादा भगवान की कृपा से ऐसा लगता है कि 'वास्तव में ऐसा ही है'। आज तक का सब गलत था, आज तक की सभी मान्यताएँ गलत हैं। जो रोंग बिलीफ थी वह राइट बिलीफ हो गई।

प्रज्ञा और भेदज्ञान

ज्ञानी पुरुष (आत्मा-अनात्मा का) भेद करा देते हैं। फिर उसके बाद प्रज्ञा उत्पन्न होती है। तब तक प्रज्ञा उत्पन्न नहीं होती। जब तक भेद नहीं कराते, तब तक अज्ञा तो है ही।

प्रश्नकर्ता : प्रज्ञा और भेदज्ञान में क्या फर्क है?

दादाश्री : भेदज्ञान हो जाने के बाद ही प्रज्ञा उत्पन्न होती है। प्रज्ञा लाइट है और यह भेदज्ञान भी लाइट है। वह लाइट तो सिर्फ दोनों को अलग रखने के लिए ही है।

प्रश्नकर्ता : और प्रज्ञा की परमानेन्ट लाइट?

दादाश्री : प्रज्ञा की लाइट टेम्परेरी-परमानेन्ट है। वह अपने आप ही फुल लाइट देती है चारों ओर से, मोक्ष में ले जाने तक। अगर उत्पन्न हो गई तो छोड़ेगी नहीं।

'प्रज्ञा', वह मूल आत्मा की शक्ति

प्रश्नकर्ता : प्रज्ञाशक्ति क्या है?

दादाश्री : प्रज्ञा नाम की जो शक्ति है, वह आत्मा में से निकलती है। क्योंकि वह (मूल) आत्मा इसमें काम नहीं कर सकता। वह शक्ति इसमें (आत्मा) से निकलती है, वह इसे मोक्ष में ले जाने तक (वास्तव में केवलज्ञान होने तक)। फिर इसका मोक्ष हो जाता है और वह (शक्ति) खुद भी एकाकार हो जाती है।

एक बार आत्मा प्रकट हुआ, तब अंदर जो चेतावनी देती रहती है, वह प्रज्ञा है। प्रज्ञा निरंतर आत्महित ही देखती रहती है। फिर सबकुछ प्रज्ञा ही कर लेती है। ठेठ मोक्ष में जाने तक।

जब तक संसार में हैं, तब तक आत्मा को कुछ नहीं करना पड़ता। आत्मा की एक 'प्रज्ञा' नाम की शक्ति बाहर निकलती है। इसका काम क्या है? दिन-रात 'यह' 'इसे' इसी तरफ, उसे मोक्ष में ले जाने के लिए ही मेहनत करती रहती है और 'अज्ञा' नाम की शक्ति, वह रात-दिन संसार में खींच ले जाना चाहती है। इन दोनों का संघर्षण होता रहता है अंदर। इन दोनों का संघर्षण निरंतर चलता ही रहता है। इसलिए लोग फिर क्या कहते हैं? अंदर कोई सचेत कर रहा है, सचेत करती है, वही प्रज्ञा है। वह मोक्ष में ले जाने तक 'उसे' नहीं छोड़ती। मोक्ष में ले जाना अर्थात् 'खुद' (प्रज्ञा का) आत्मा में समा जाना और 'उसे' ('मैं' को) भी खुद को आत्मा में समा जाना है। 'अज्ञा', वह बुद्धि है और 'प्रज्ञा', वह मूल वस्तु है।

आत्मा का अंग - 'प्रज्ञा'

प्रश्नकर्ता : प्रज्ञाशक्ति ही आत्मा है या अलग है?

दादाश्री : आत्मा और प्रज्ञा दोनों अलग चीज़ें हैं। आत्मा प्रकट होने के बाद में प्रज्ञा उत्पन्न होती है। आत्मा का अंग है वह।

प्रश्नकर्ता : कई बार बातचीत में हम ऐसे शब्दों का उपयोग करते हैं न कि प्रज्ञा आत्मा का ही भाग है।

दादाश्री : हाँ, वह तो है ही न!

प्रश्नकर्ता : आत्मा का भाग है?

दादाश्री : आत्मा का भाग, उसका ऐसा अर्थ नहीं निकालना है। आप अपनी भाषा में ले जाते हो सभी बातें।

वह उसका स्वभाव है कि किसी काल का संयोग हुआ कि प्रज्ञा खुद उत्पन्न हो जाती है और फिर मोक्ष में पहुँचाकर लय हो जाती है। यह अज्ञा भी उत्पन्न हुई है और लय हो जाएगी।

प्रज्ञा का कार्य केवलज्ञान होते ही समाप्त हो जाता है। इसलिए उसे आत्मभाव कहा ही नहीं जा सकता। क्योंकि यदि ऐसा कहें, तो वह आत्मा का अन्वय गुण कहलाएगा और अन्वय गुण कहें, तो फिर सिद्धक्षेत्र में विराजमान सिद्ध भगवंतों में भी प्रज्ञा होनी चाहिए, लेकिन ऐसा नहीं है, क्योंकि वहाँ उसका कोई कार्य ही नहीं होता। फुल्ली इन्डिपेन्डेन्ट गवर्नमेन्ट की स्थापना होने के बाद इन्ट्रिम गवर्नमेन्ट अपने आप ही विसर्जित हो जाती है, ऐसा ही प्रज्ञा के लिए भी है।

भगवान की रिप्रेज़ेन्टेटिव - 'प्रज्ञा'

प्रश्नकर्ता : तो प्रज्ञा में थोड़ा-बहुत विकल्प का भाग है न?

दादाश्री : विकल्प से कोई लेना-देना नहीं है वहाँ पर। सभी विकल्प अज्ञा में हैं। इसमें विकल्प वगैरह कुछ भी नहीं है, निर्विकल्पी है यह। चेतन है, जड़ नहीं है।

प्रश्नकर्ता : क्या प्रज्ञा *पुद्गल* है?

दादाश्री : नहीं, वह *पुद्गल* नहीं है, वह बीच का भाग है। आत्मा के मोक्ष में जाने तक वह रहती है। स्टीमर में चढ़ने के लिए सीढ़ियाँ रखते हैं न और फिर उठा लेते हैं, उसके जैसा है।

प्रश्नकर्ता : प्रज्ञा, वह *पुद्गल* नहीं है, वह आत्मा और *पुद्गल* के बीच का भाग है?

दादाश्री : नहीं, आत्मा और *पुद्गल* के बीच का भाग नहीं है। आत्मा का एक भाग अलग हो जाता है, जब हम ज्ञान देते हैं उस दिन। मोक्ष में ले जाने तक आत्मा इसमें कुछ भी नहीं करता। अत: आत्मा का यह भाग उससे अलग रहकर काम करता रहता है। आत्मा के सभी अधिकार प्रज्ञा के हाथ में हैं, मुख्तारनामे की तरह!

प्रश्नकर्ता : तो फिर भगवान क्या करते हैं? वे तो ज्ञाता-दृष्टा हैं। किसी भी चीज़ में हाथ ही नहीं डालते, वीतराग हैं।

दादाश्री : हाथ डालने को रहता ही नहीं न! प्रज्ञा तो भगवान की रिप्रेज़ेन्टेटिव जैसी है।

रियल में से उत्पन्न होने वाली प्रज्ञाशक्ति

संसार अज्ञान से उत्पन्न होता है और प्रज्ञा से अस्त होता है। प्रज्ञा उत्पन्न होने के बाद राग-द्वेष का निंदन किया जा सकता है, आत्मा को कुछ भी नहीं करना पड़ता। आत्मा प्राप्त होने के बाद प्रज्ञा उत्पन्न होती है, वह रियल और रिलेटिव दोनों का संभालती है। 'रियल-रिलेटिव' वह प्रज्ञा देखती है, आत्मा नहीं देखता। प्रज्ञा देखती है अर्थात् वह आत्मा के खाते में ही गया। संसार में लोग जो देखते हैं वह अज्ञा देखती है, अत: वह अहंकार के खाते में गया। दोनों के देखने-जानने में अंतर है। अज्ञा का इन्द्रियगम्य है और प्रज्ञा का अतीन्द्रियगम्य है।

प्रश्नकर्ता : यानी प्रज्ञा 'रिलेटिव' में से आती है या 'रियल' में से?

दादाश्री : वह 'रियल' में से आती है। यानी वह 'रियल' में से उत्पन्न होने वाली शक्ति है। रियल में से उत्पन्न होने वाली शक्ति, वह है 'प्रज्ञा' और रिलेटिव में से उत्पन्न होने वाली शक्ति, वह 'अज्ञा' कहलाती है।

मिथ्यात्व फ्रेक्चर होते ही प्रज्ञा हाज़िर

प्रश्नकर्ता : प्रज्ञा का उद्भव स्थान कौन सा है?

दादाश्री : उसका कोई स्थान नहीं होता, उसका तो काल (समय) होता है। जिस समय मिथ्यात्व फ्रेक्चर हो जाता है, तब प्रज्ञा हाज़िर हो जाती है। बुद्धि पर आघात लगे तो हाज़िर हो जाती है।

प्रश्नकर्ता : प्रज्ञा कैसे उत्पन्न होती है और कहाँ से उत्पन्न हुई?

दादाश्री : वह तो, जब 'हम' ज्ञान देते हैं तभी उत्पन्न हो जाती है। ज्ञान से प्रज्ञा उत्पन्न हो गई। प्रज्ञा का काम शुरू हो गया।

अज्ञा से अहंकार है। निर्अहंकारी होने के बाद प्रज्ञा उत्पन्न होती है। 'मैं शुद्धात्मा हूँ', ऐसा *लक्ष* बैठने के बाद प्रज्ञाशक्ति उत्पन्न होती है।

ज्ञान के बाद अज्ञा घटेगी, प्रज्ञा बढ़ेगी

प्रश्नकर्ता : अज्ञा और प्रज्ञा, इन दोनों में से किसकी चलती है?

दादाश्री : दोनों की ही चलती है। हर एक

के अपने क्षेत्र में, अपने-अपने क्षेत्र में दोनों की ही चलती है।

प्रश्नकर्ता : इसका मतलब ज्ञान के बाद अज्ञा और प्रज्ञा दोनों साथ में रहते हैं। अज्ञा होती है तब प्रज्ञा नहीं होती और जब प्रज्ञा होती है तब अज्ञा नहीं होती?

दादाश्री : नहीं, दोनों साथ में रहती हैं। उसमें उलझन होती रहती है। आपको यह ज्ञान दिया है, फिर भी देह में दोनों साथ में रहती हैं। अत: यह जो अज्ञा है, उसकी वजह से थोड़ा सफोकेशन होता है, घुटन होती है। धीरे-धीरे अब उस अज्ञाशक्ति का नाश हो जाएगा और प्रज्ञा बढ़ती जाएगी।

प्रश्नकर्ता : उलझन होती है तब ऐसा लगता है कि अज्ञाशक्ति जाने वाली है।

दादाश्री : जब उलझन होती है उस समय अज्ञाशक्ति है। फिर जब उसका कुछ नहीं चलता है तो वह उलझन में पड़ जाती है और बाद में खत्म हो जाती है। जब तक अज्ञान है तब तक वह अज्ञाशक्ति रहेगी और अज्ञाशक्ति जितनी कम हुई, प्रज्ञाशक्ति उतनी ही मुक्त हुई। (अज्ञाशक्ति) सफोकेशन और घुटन होती है। वह अपना कुछ ले नहीं जाती लेकिन उससे घुटन करवाती है इसलिए जो सुख आ रहा हो, उसे आने नहीं देती। आत्मा के साथ बैठे हैं, तो सुख आना चाहिए, वेदन होना चाहिए लेकिन नहीं होने देती। उसे घुटन होने देती है। चिंता नहीं करवाती, सिर्फ घुटन करवाती है।

पहले जो हमें संसार की सभी इच्छाएँ उत्पन्न हुई थीं, उन इच्छाओं को पूर्ण करने के लिए अज्ञाशक्ति काम कर रही है। लेकिन अब अज्ञाशक्ति का ज़ोर बिल्कुल भी नहीं बढ़ेगा। ऐसा नहीं है कि उसमें से अन्य इच्छाएँ उत्पन्न हो जाएँ। अत: ऐसा नहीं है कि बीज में से बीज पड़ें। जो हैं, वही के वही और साथ-साथ प्रज्ञाशक्ति हम से कहती है, 'मुझे *निकाल* कर ही देना है इन सब का। अब पेन्डिंग नहीं रखना है, भाई'। *निकाल* अर्थात् जिसे कहते हैं न, निपटारा कर देना!

प्रज्ञा और दिव्यचक्षु

प्रश्नकर्ता : हम सभी को आपके द्वारा प्रदान किए गए दिव्यचक्षु से, हम में उद्भव होने वाले क्रोध-मान-माया-लोभ व अब्रह्मचर्य के परिणाम दृष्टिगोचर होते रहते हैं, क्या वह दिव्यचक्षु ही प्रज्ञाशक्ति है?

दादाश्री : प्रज्ञाशक्ति से ही यह दिखाई देता है। जबकि दिव्यचक्षु तो एक ही काम करते हैं, कि औरों में शुद्धात्मा देखने का। बाकी का यह सब क्रोध-मान-माया-लोभ, अब्रह्मचर्य के परिणाम वगैरह सभी अंदर दिखाई देते हैं, वह सब प्रज्ञाशक्ति का काम है। जब तक संसार के परिणामों का *निकाल* करना बाकी है, तब तक यह प्रज्ञा काम करती है।

दिव्यचक्षु तो बस एक ही काम करते हैं। ये चमड़े के चक्षु रिलेटिव को दिखाते हैं और दिव्यचक्षु रियल को दिखाते हैं। दिव्यचक्षु अन्य कोई भी काम नहीं करते।

प्रश्नकर्ता : प्रज्ञा और दिव्यचक्षु दोनों एक ही हैं?

दादाश्री : नहीं, दिव्यचक्षु तो चक्षु हैं और प्रज्ञा तो एक शक्ति है। दिव्यचक्षु का तो आप यदि उपयोग नहीं करोगे तो उपयोग में नहीं आएँगे, लेकिन एक बार प्रज्ञा जागृत हो जाए तो फिर वह निरंतर चेतावनी देती ही रहती है।

प्रज्ञा का कार्य

इस प्रज्ञा का फंक्शन क्या है? कार्य क्या

है? प्रज्ञा तो 'पति ही परमेश्वर' ऐसा मानने वाली वफादार पत्नी का कार्य करती है। आत्मा के संपूर्ण हित का ही दिखलाती है और अहित को छुड़वाती है। जितने-जितने बाह्य संयोग आएँ, उनका समभाव से *निकाल* कर देती है और फिर अपने स्वरूप के ध्यान में बैठ जाती है। अत: अंदर का कार्य भी करती है और बाहर का भी कार्य करती है, 'इन्ट्रिम गवर्नमेन्ट' की तरह। और वह भी तभी तक, जब तक कि फुल्ली इन्डिपेन्डेन्ट गवर्नमेन्ट स्थापित नहीं हो जाती।

अब अज्ञा में क्या होता है कि 'यह मैंने किया, मैंने दु:ख भोगा, उसने किया, उसने गालियाँ दीं मुझे'। प्रज्ञा क्या कहती है कि 'मैं कर्ता नहीं हूँ, मैं भोक्ता नहीं हूँ, मैं ज्ञाता हूँ'। सामने वाले ने मुझे गालियाँ दीं तो वह निमित्त है बेचारा, वह भी कर्ता नहीं है, यह सब से अंतिम प्रकार का ज्ञान है। सामने वाला कर्ता नहीं दिखाई दे और खुद भी कर्ता नहीं है, ऐसा भान रहा तो यह मोक्ष का सब से अंतिम साधन है।

जब 'ज्ञानी पुरुष' मिल जाते हैं, तब प्रज्ञादेवी हाज़िर हो जाती हैं। अज्ञादेवी संसार से बाहर निकलने नहीं देती, और प्रज्ञादेवी संसार में घुसने नहीं देती। इन दोनों का झगड़ा चलता रहता है! दोनों में से जिसका बल अधिक होता है, वह जीत जाती है। 'हम' 'शुद्धात्मा' हुए यानी प्रज्ञादेवी के पक्षकार हो गए और इसीलिए उसकी जीत होगी ही।

प्रज्ञा आत्मा की, बुद्धि पावर चेतन की

प्रज्ञा जो है, वह मूल आत्मा की शक्ति है। और यह (आत्मा-अनात्मा) दोनों का संपूर्ण डिविज़न हो जाने के बाद में, पूरी तरह से अलग हो जाने के बाद, अलग हो जाने के बाद, फिर वह आत्मा में फिट हो (समा) जाती है। तब तक मोक्ष में ले जाने के लिए वह निकलती है, आत्मा में से।

प्रश्नकर्ता : तो प्रज्ञाशक्ति आत्मा की ही कहलाती है?

दादाश्री : हाँ, प्रज्ञाशक्ति आत्मा की है और बुद्धिशक्ति इस पावर चेतन की है।

प्रश्नकर्ता : तो बुद्धि वह प्रज्ञा हो जाती है?

दादाश्री : नहीं, बुद्धि वह प्रज्ञा नहीं हो जाती। बुद्धि, बुद्धि की जगह पर रहती है और प्रज्ञा प्रकट होती है। हम यह ज्ञान देते हैं तो तुरंत ही प्रज्ञा प्रकट हो जाती है। प्रज्ञा आपको निरंतर मोक्ष में ले जाना चाहती है और बुद्धि आपको इस तरफ नीचे ले जाना चाहती है। यह जो अंदर सचेत करती है न, वह प्रज्ञा सचेत करती है कि 'ऐसा नहीं और ऐसा', इस तरह से सचेत करती है।

प्रश्नकर्ता : प्रज्ञा भी पावर चेतन ही है न?

दादाश्री : नहीं, पावर चेतन नहीं है, वह मूल चेतन है। लेकिन मूल चेतन में से निकली है, वह भी इस कार्य को करने के लिए ही। उसके बाद वापस मूल आत्मा में एक हो जाती है।

बुद्धि इनडायरेक्ट और प्रज्ञा डायरेक्ट प्रकाश

प्रश्नकर्ता : दादा, सामान्य बुद्धि और प्रज्ञा में क्या फर्क है?

दादाश्री : सामान्य बुद्धि का मतलब है कॉमनसेन्स। वह हमेशा ही संसार (की उलझनें) सुलझा देती है। संसार के सभी ताले खोल देती है, लेकिन मोक्ष का एक भी ताला नहीं खोल सकती।

प्रज्ञा, वह चीज़ अलग है। प्रज्ञा तो बुद्धि से पर चीज़ है। बुद्धि का स्वभाव कैसा है कि बुद्धि अज्ञा में से उत्पन्न हुई है।

प्रश्नकर्ता : एक्ज़ेक्टली (वास्तव में) बुद्धि क्या कार्य करती है?

दादाश्री : एक्ज़ेक्टली बुद्धि का यदि मीनींग (अर्थ) करने जाए तो निर्णय लेने के अलावा और कोई भी काम नहीं करती।

प्रश्नकर्ता : यानी डिसिज़न (निर्णय) बुद्धि ही लेती है?

दादाश्री : हाँ, डिसिज़न बुद्धि लेती है। दो प्रकार के डिसिज़न, एक मोक्ष में जाने का डिसिज़न प्रज्ञा लेती है और संसार का डिसिज़न अज्ञा लेती है। अज्ञा अर्थात् बुद्धि। अज्ञा-प्रज्ञा के डिसिज़न हैं, ये सभी।

प्रश्नकर्ता : अज्ञाशक्ति अर्थात् बुद्धि?

दादाश्री : हाँ, वह बुद्धि ही है लेकिन बुद्धि-अहंकार वगैरह सब मिलकर वह शक्ति बनती है। सिर्फ बुद्धि हो तब तो उसे हम बुद्धि कहेंगे, और प्रज्ञा का अर्थ है ज्ञान। आत्मा वगैरह सब मिलकर प्रज्ञाशक्ति उत्पन्न होती है।

प्रज्ञा आत्मा का डायरेक्ट प्रकाश है, जबकि बुद्धि इनडायरेक्ट प्रकाश है। मिडियम थ्रु आने वाला प्रकाश है।

प्रज्ञा - बुद्धि के कार्य में फर्क

प्रश्नकर्ता : यह काम प्रज्ञा ने किया है या बुद्धि ने, उसका पता किस तरह से चलेगा? बुद्धि और प्रज्ञा की व्याख्या क्या है? कुछ बात होती है तब बुद्धि दौड़ाते हैं, तब कहते हैं कि बुद्धि चलाई, तो बुद्धि क्या है?

दादाश्री : जो *अजंपा* (बेचैनी, अशांति) करे, वह बुद्धि है। प्रज्ञा में *अजंपा* नहीं होता। आपको ज़रा सा भी *अजंपा* हुआ तो समझ जाना कि बुद्धि का चलन है। आपको बुद्धि का उपयोग नहीं करना हो तो भी उसका उपयोग होता ही है। वही आपको शांति से नहीं बैठने देती है। वह आपको 'इमोशनल' करवाती है। उस बुद्धि से हमें ऐसा कहना चाहिए कि 'हे बुद्धि बहन! आप अपने मायके चली जाओ। अब आपके साथ हमें कुछ लेना-देना नहीं है।' सूर्य का उजाला होने के बाद मोमबत्ती की ज़रूरत है क्या? अर्थात् आत्मा का प्रकाश होने के बाद बुद्धि के प्रकाश की ज़रूरत नहीं रहती।

अब, वह बुद्धि संसार से बाहर निकलने न दे, ऐसी है। 'खुद को' मुक्त होने के इच्छा होती है तो बुद्धि 'उसे' घुमा (पलट) देती है। क्योंकि वह संसार में ही रखती है और संसार में हेल्प करती है। वह संसार में सबको सेफसाइड कर देती है। प्रज्ञा बिल्कुल भी संसार में नहीं रहने देती, सचेत करती रहती है, कि 'यहाँ उलझन है, यहाँ भूल है' और मोक्ष में ले जाना चाहती है। इन दोनों का घर्षण चलता रहता है।

प्रश्नकर्ता : क्या प्रज्ञा बुद्धि से भी बहुत उच्च वस्तु है?

दादाश्री : हाँ, वह बुद्धि से उच्च है लेकिन विज्ञान प्रज्ञा से भी बहुत उच्च है लेकिन आप जिसे विज्ञान मानते हो न, वह बौद्धिक विज्ञान है। अर्थात् अभी जो चल रहा है, उस विज्ञान की बात कर रहे हो? उस विज्ञान का अर्थ आपने अपनी भाषा में समझा है। जिसे लोक भाषा में विज्ञान कहते हैं, आप उसी को विज्ञान कह रहे हो? वह तो भौतिक विज्ञान है और हम आध्यात्मिक विज्ञान की बात कर रहे हैं।

प्रज्ञा और सम्यक् बुद्धि में फर्क

प्रश्नकर्ता : दादा, क्या सम्यक् बुद्धि ही प्रज्ञा है?

दादाश्री : नहीं, प्रज्ञा उससे उच्च प्रकार का भाग है। प्रज्ञा तो प्रतिनिधि है आत्मा की।

प्रश्नकर्ता : सम्यक् बुद्धि और प्रज्ञा में मूल अंतर क्या है?

दादाश्री : बुद्धि अर्थात् बुद्धि। जब तक बुद्धि है, तब तक उसका मालिक है। बुद्धि मालिकीपने वाली होती है। प्रज्ञा का कोई मालिक नहीं है। बुद्धि तो अगर विपरीत हो, तब भी वह मालिकी वाली होती है। सम्यक् बुद्धि हो तो वह भी मालिकी वाली।

प्रश्नकर्ता : सम्यक् बुद्धि हो लेकिन यदि मालिकी वाली हो तो नुकसान करती है या सबकुछ सही ही बताती है?

दादाश्री : अवश्य, नुकसान ही करती है न! बुद्धि तो न जाने कब पलट जाए, उसके बारे में क्या कहा जा सकता है? जो सम्यक्ता की भजना करता है, वह कब विपरीतता को भजने लगे, वह कहा नहीं जा सकता। और सम्यक् बुद्धि का मतलब क्या है? संसार में सम्यक् बुद्धि नहीं होती। सम्यक् बुद्धि पुस्तक पढ़ने से उत्पन्न नहीं हो सकती। सम्यक् बुद्धि तो, जब वह ज्ञानी पुरुष की बातें सुने, तब उसकी बुद्धि सम्यक् होती है। हाँ, फिर वह बुद्धि अटैकिंग स्वभाव या ऐसा कुछ उल्टा-सुल्टा नहीं करती। अटैक न करे, हमला न करे, वह सम्यक् बुद्धि कहलाती है। चाहे कैसे भी संयोग हों लेकिन हमला न करे, वह सम्यक् बुद्धि कहलाती है और जो प्रत्येक संयोग में हमला करे, वह विपरीत बुद्धि कहलाती है।

प्रज्ञा डायरेक्ट प्रकाश है और सम्यक् बुद्धि इनडायरेक्ट प्रकाश है। अर्थात् प्रज्ञा डायरेक्ट आत्मा का ही भाग है, जबकि सम्यक् बुद्धि वैसी नहीं है। फिर भी उसका भी निबेड़ा तो लाना ही पड़ेगा।

प्रश्नकर्ता : लेकिन सम्यक् बुद्धि उपकारी तो है न?

दादाश्री : जब तक स्टेशन तक नहीं पहुँचे हैं, तब तक उपकारी है। स्टेशन पर पहुँचने के बाद, इससे आगे जाने के लिए वह उपकारी नहीं है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन ज्ञान लेने के बाद सम्यक् बुद्धि नहीं रहती या रहती है?

दादाश्री : ज्ञान लेने के बाद तो प्रज्ञा उत्पन्न हो जाती है। उसके बाद समभाव से *निकाल* करने में प्रज्ञा हेल्प करती है। अत: सम्यक् बुद्धि और प्रज्ञा में बहुत अंतर है! सम्यक् बुद्धि तो बुद्धि कहलाती है और प्रज्ञा तो एक प्रकार से परमानेन्ट वस्तु का भाग है।

प्रश्नकर्ता : जिस प्रकार प्रज्ञा सचेत करती है, उसी प्रकार सम्यक् बुद्धि क्या हेल्प करती है?

दादाश्री : वह भी वैसा ही काम करती है लेकिन वह तो खुद ही विनाशी है न! इसलिए कोई बहुत बड़ी चेतावनी नहीं दे सकती।

प्रश्नकर्ता : बस इतना ही है कि हिताहित का भान रखती है।

दादाश्री : यह तो वही बुद्धि है, यह सांसारिक बुद्धि होती है न, वैसी ही। वह भी, जब ज्ञानी पुरुष के पास बैठे रहें तब वह बुद्धि फिर सम्यक् हो जाती है। सम्यक् होती जाती है बुद्धि! बाकी, सम्यक् तो सिर्फ ज्ञान ही होता है, लेकिन यह बुद्धि सम्यक् हो जाती है। अव्यभिचारिणी बुद्धि तो अशांति में भी शांति करवा देती है, प्रज्ञा प्रकट होने से पहले की स्टेज है।

कृष्ण भगवान ने दो प्रकार की बुद्धि कही; व्यभिचारिणी और अव्यभिचारिणी। अव्यभिचारिणी बुद्धि स्थिर होती जाती है, अस्थिर तो है ही अभी। अस्थिर अर्थात् इमोशनल। वह स्थिर होती जाती है दिनों दिन। स्थिर होने के बाद जैसे संख्या में सतानवे के बाद अठानवे, निन्यानवे गिना जाता है और सौ को मुख्य चीज़ कहा जाता है तब जाकर

पूर्णाहुति होती है। हन्ड्रेड परसेन्ट, सेन्ट परसेन्ट है, ऐसा कहते हैं। यह जो स्थितप्रज्ञ दशा है, वह बुद्धि की स्थिरता का सेन्ट परसेन्ट है और प्रज्ञा तो फुल वस्तु ही है, मूल वस्तु है।

प्रज्ञा और स्थितप्रज्ञ में फर्क

प्रश्नकर्ता : प्रज्ञा व स्थितप्रज्ञ, इन शब्दों में से 'स्थितप्रज्ञ' क्या है? यह समझाइए।

दादाश्री : खुद को सही तरह से पहचानने की जो समझ है न, उसमें स्थिर होना, वह स्थितप्रज्ञ कहलाता है।

स्थितप्रज्ञ, वह तो एक दशा है। प्रज्ञा उत्पन्न होने वाली हो, उससे पहले यह दशा आती है। प्रज्ञा शुरू से पहले यह दशा आती है। जो संसार में साक्षीभाव वाली दशा होती है।

प्रज्ञा तो आत्मा प्राप्त होने के बाद उत्पन्न होती है और स्थितप्रज्ञ दशा आत्मा प्राप्त होने से पहले आती है, वह व्यवहार में अहंकार सहित होती है। लेकिन वह व्यवहार बहुत सुंदर होता है।

स्थितप्रज्ञ होने के बाद भी कभी अज्ञाशक्ति सवार हो जाती है। स्थितप्रज्ञ की मदद से चली भी जाती है लेकिन स्थितप्रज्ञ दशा में उसके सवार होने का भय भी रहता है। प्रज्ञाशक्ति उत्पन्न होने के बाद भय नहीं रहता।

प्रश्नकर्ता : इस स्थितप्रज्ञ की जो बात है, वह ज़रा और विस्तार से समझाइए।

दादाश्री : वह तो जब कोई व्यक्ति शास्त्रों का खूब अध्ययन करता है, संतों की सेवा करता है, खूब मेहनत से व्यापार करता है और व्यापार में नुकसान हो जाता है। तब इन सभी प्रकार के अनुभवों में से (सार निकालकर) पार निकलता जाता है, फिर आगे बढ़ते-बढ़ते जब बुद्धि स्थिर हो जाती है, तब वह स्थितप्रज्ञ कहलाता है। उसकी बुद्धि स्थिर हो जाती है। इधर से हवा आए तो भी यों हिल नहीं जाता, इधर से आए तो भी यों हिल नहीं जाता। ऐसी स्थिर बुद्धि हो तब वह स्थितप्रज्ञ कहलाता है।

स्थितप्रज्ञ दशा बहुत ही सद्विवेक वाली जागृति दशा है। वह अनुभव करते-करते आगे बढ़ता है। जनकविदेही की दशा स्थितप्रज्ञ से भी उच्च थी।

प्रश्नकर्ता : प्रज्ञा और स्थितप्रज्ञ, इन दोनों में कोई डिमार्केशन लाइन जैसा है क्या?

दादाश्री : बहुत फर्क है। स्थितप्रज्ञ दशा तो प्रज्ञा से बहुत निम्न है। स्थितप्रज्ञ का मतलब क्या है कि खुद अपनी बुद्धि से सोच-सोचकर स्थिर होता है। और इसलिए खुद अपने प्रश्नों का सॉल्यूशन ला सकता है। लेकिन वह स्थितप्रज्ञ कहलाता है और प्रज्ञा, वह तो बहुत उच्च वस्तु है। स्थितप्रज्ञ यानी बुद्धि को स्थिर कर लिया है सिर्फ इतना ही है, अन्य कुछ नहीं।

स्थितप्रज्ञ से भी उच्च दशा

प्रश्नकर्ता : यह स्थितप्रज्ञ दशा में भी राग-द्वेष रहित दशा कही है, वीतरागता जैसी?

दादाश्री : नहीं, वह राग-द्वेष रहित दशा नहीं है। लेकिन हर एक प्रश्न का सॉल्यूशन ले आता है। इसलिए किसी पर राग-द्वेष नहीं करता! वह सॉल्यूशन आ जाए तो फिर कौन राग-द्वेष करेगा? लेकिन सब बुद्धि से। अव्यभिचारिणी बुद्धि की स्थिरता को स्थितप्रज्ञ कहा गया है, जबकि लोगों की अस्थिर बुद्धि होती है। जिसकी बुद्धि स्थिर हो चुकी है, वह स्थितप्रज्ञ कहलाता है। क्योंकि बुद्धि विशेष रूप से बढ़कर, अज्ञा में से आगे बढ़ते-बढ़ते अंत में स्थितप्रज्ञ तक पहुँचती है।

लोगों को स्थितप्रज्ञ किस प्रकार से होता है? उन्हें ऐसा लगता है कि 'मैं आत्मा हूँ', कुछ देर के लिए उसमें स्थिर रह पाए और फिर वापस विचलित हो जाए, वह स्थितप्रज्ञ है। प्रज्ञा में स्थिर होने जाता है और वापस विचलित हो जाता है। उसमें निरंतर रह ही नहीं पाता न! पूरा साइन्स हाथ में नहीं आता न! क्योंकि चार वेद पढ़ने के बाद वेद इटसेल्फ कहते हैं, दिस इज़ नॉट देट, दिस इज़ नॉट देट, दिस इज़ नॉट देट। तो व्हॉट इज़ देट? तब कहते हैं, 'गो टू ज्ञानी'। क्योंकि उस अवक्तव्य, अवर्णनीय को शब्दों में कैसे व्यक्त किया जा सकता है? आत्मा शब्दों में कैसे व्यक्त किया जा सकता है? इसलिए उसे अवक्तव्य कहा है, अवर्णनीय कहा है।

स्थितप्रज्ञ दशा की तुलना में प्रज्ञाशक्ति बहुत उच्च है। स्थितप्रज्ञ दशा में तो व्यवहार में निपुण होता है। दूसरा, लोगों की ओर से निंदा, ऐसी चीज़ नहीं होती। वह अपने आपको स्थितप्रज्ञ मान सकता है। क्योंकि उसकी बुद्धि स्थिर हो चुकी है। लेकिन यह प्रज्ञा, वह तो मोक्ष में ले जाती है। स्थितप्रज्ञ को मोक्ष में जाने के लिए अभी आगे मार्ग की ज़रूरत पड़ेगी।

प्रश्नकर्ता : तो यह स्थितप्रज्ञ, वह प्रज्ञा से पहले की स्थिति है?

दादाश्री : हाँ, यह प्रज्ञा से पहले की स्थिति है लेकिन लोगों ने तो इसे बहुत बड़ी चीज़ बना दिया है। स्थितप्रज्ञ तो इससे निम्न स्थिति है। उसके बाद प्रज्ञा उत्पन्न होती है। पहले स्थितप्रज्ञ होते, होते, होते, फिर प्रज्ञा उत्पन्न होती है।

यह तो स्थितप्रज्ञ यानी प्रज्ञा ज़रा-ज़रा सी, अंशत: आती है और वह खुद उसमें स्थिर होता जाता है, जबकि हम जब यहाँ पर ज्ञान देते हैं तब तो सर्वांश ही प्रज्ञा उत्पन्न हो जाती है।

प्रज्ञा सचेत करती है अहंकार को

प्रश्नकर्ता : जब कुछ विचार आते हैं, तब हम उनसे कहते हैं कि 'तेरा यह सब गलत है'। अब, यह कहने वाला कौन है? आपसे मिलने के बाद! पहले तो ऐसा कुछ था ही नहीं। तो वह मार्गदर्शन कौन देता है? प्रज्ञा या बुद्धि?

दादाश्री : हमें प्रज्ञा सचेत करती है। क्योंकि अब मोक्ष में जाने का वीज़ा मिल गया है। उसके बाद यदि मनुष्य अहंकार करके उस प्रज्ञा को दबा देता है, तो फिर वापस पागलपन करता है।

प्रश्नकर्ता : अंदर जो यह प्रज्ञा सचेत करती है, तो वह मन द्वारा सचेत करती है या बुद्धि द्वारा सचेत करती है, चित्त द्वारा या अहंकार द्वारा सचेत करती है?

दादाश्री : प्रज्ञा सचेत करती है, अहंकार को सचेत करती है, अन्य किसी को नहीं।

प्रश्नकर्ता : लेकिन क्या डायरेक्ट सचेत करती है?

दादाश्री : डायरेक्ट। अन्य किसी को अधिकार ही नहीं है न! अहंकार का कोई *ऊपरी* (बॉस, वरिष्ठ मालिक)नहीं है। अहंकार का कोई *ऊपरी* नहीं है, फिर भी पूरे दिन वह करता तो है सारा बुद्धि का कहा हुआ।

प्रश्नकर्ता : यह प्रज्ञा जब अहंकार को सचेत करती है तब बुद्धि क्या करती है? तब फिर क्या बुद्धि अलग रहती है?

दादाश्री : बुद्धि को क्या लेना-देना? बुद्धि नाम ही नहीं लेती।

प्रश्नकर्ता : तो फिर कुछ भी नहीं?

दादाश्री : बुद्धि का कार्य ही नहीं है न!

प्रश्नकर्ता : प्रज्ञा के हाज़िर हो जाने पर बुद्धि का अस्तित्व ही नहीं रहता न?

दादाश्री : अत: फिर बुद्धि उसकी हेल्प करती है अहंकार के कहे अनुसार।

प्रश्नकर्ता : अच्छा, तो फिर इसे सीधा भी बुद्धि ही कर देती है?

दादाश्री : फिर सभी मिलकर सीधा कर देते हैं। सिर्फ बुद्धि ही नहीं, सभी।

फर्क, चित्त और प्रज्ञा में

प्रश्नकर्ता : चित्त और प्रज्ञा में क्या फर्क है?

दादाश्री : चित्त तो, जो पहले से देखा हुआ होता है, वही देखता है और प्रज्ञा तो नया ही देखती है। खुद के दोष दिखाए, वह प्रज्ञा है। चित्त सभी को देखता है लेकिन प्रज्ञा को नहीं देख सकता। प्रज्ञा को तो हम देख सकते हैं। चित्त देखे हुए को देखता है, जबकि प्रज्ञा विशेष जानती है।

प्रश्नकर्ता : आज सुबह सामायिक में आपका ही निदिध्यासन रहा, वह क्या है? मैं उसे शुद्ध चित्त समझता हूँ।

दादाश्री : नहीं, वह सारा काम तो प्रज्ञाशक्ति का है। शुद्ध चित्त तो वह खुद ही आत्मा है। शुद्धात्मा ही शुद्ध चिद्रूप (चित्त स्वरूप) है। यह सब तो प्रज्ञा करती है।

प्रश्नकर्ता : सभी जगह दादा बैठे हुए दिखाई देते हैं। वह क्या है?

दादाश्री : वही प्रज्ञा है न। अज्ञाशक्ति तो दूसरा ही दिखाती है। लक्ष्मी दिखाती है, स्त्रियाँ दिखाती है, वह अज्ञाशक्ति है। अज्ञाशक्ति स्त्री का निदिध्यासन करवाती है और प्रज्ञाशक्ति ज्ञानी पुरुष का। ज्ञानी पुरुष अर्थात् आत्मा का निदिध्यासन करवाती है।

प्रश्नकर्ता : अब जिसने अभी ज्ञान लिया है, उसे भी स्त्री का निदिध्यासन हो जाता है तो क्या वह अज्ञा डिपार्टमेन्ट है?

दादाश्री : वह तो चंदूभाई का भाग है, उससे हमें क्या लेना-देना?

प्रश्नकर्ता : नहीं, तो फिर उसमें चित्त का फंक्शन कहाँ पर आया?

दादाश्री : वह तो चंदूभाई का भाग है, अशुद्ध चित्त है।

प्रश्नकर्ता : तो फिर यह प्रज्ञा ज्ञानी पुरुष का जो निदिध्यासन करवाती है, उसमें चित्त का फंक्शन कहाँ आया?

दादाश्री : उसमें चित्त की ज़रूरत ही नहीं है। प्रज्ञाशक्ति खुद ही देख सकती है।

प्रश्नकर्ता : इसे एक्ज़ेक्ट फोटोग्राफी कहते हैं?

दादाश्री : हाँ, एक्ज़ेक्ट! फोटोग्राफी से भी अच्छा।

प्रश्नकर्ता : चित्त का काम ही नहीं रहा।

दादाश्री : शुद्ध चित्त था, वह आत्मा में एक हो गया। आत्मा में मिल गया।

प्रश्नकर्ता : तो निदिध्यासन को देखने वाला कौन है?

दादाश्री : वह प्रज्ञाशक्ति है।

प्रश्नकर्ता : वह खुद ही देखती है और खुद ही धारण करती है?

दादाश्री : वह खुद ही है सबकुछ। उसी की हैं सारी क्रियाएँ। चित्त की ज़रूरत ही नहीं रही वहाँ पर।

प्रश्नकर्ता : यह चित्त जब शुद्ध हो जाता है, तब प्रज्ञा उत्पन्न होती है न?

दादाश्री : चित्त जब शुद्ध हो जाता है तब शुद्धात्मा में मिल जाता है। उसके बाद प्रज्ञाशक्ति की शुरुआत हो जाती है। शुद्ध चित्त, वही शुद्ध चिद्रूप आत्मा है।

श्रद्धा - प्रज्ञा की सूक्ष्म समझ

प्रश्नकर्ता : श्रद्धा, प्रज्ञा, दृष्टा और चेतन, इनके बारे में कुछ बताइए।

दादाश्री : दृष्टा और चेतन एक ही हैं। श्रद्धा दो प्रकार की होती है। संसार व्यवहार में जो श्रद्धाएँ रखी जाती हैं न, वे सब मिथ्यात्व श्रद्धाएँ हैं और अगर इस तरफ आ गया, तो वह सम्यक्त्व श्रद्धा है, जिसे प्रतीति कहा जाता है। वह चेतन का भाग है और प्रज्ञा भी चेतन का भाग है लेकिन प्रज्ञा अलग.. श्रद्धा, प्रतीति वाला भाग है और (प्रज्ञा) फिर वापस (आत्मा के साथ) एक हो जाती है। जबकि यह श्रद्धा, प्रतीति तो हमेशा अलग ही रहेंगे। गुणों को लेकर दोनों अलग हैं लेकिन स्वभाव से एक हैं। श्रद्धा तो उसका मूल स्वभाव ही है। जब वह प्रतीति में आता है तब श्रद्धा के रूप में होता है और तब प्रज्ञा अलग हो जाती है और प्रज्ञा खुद का कार्य पूरा करने के बाद एकाकार हो जाती है। प्रज्ञा, 'अज्ञा' का नाश करने के लिए है। प्रज्ञा में अज्ञा का नाश करने का गुण है लेकिन अलग होकर 'अज्ञा' का नाश करने के बाद वह तुरंत आत्मा में मिल जाती है। अतः प्रज्ञा तो खुद आत्मा ही है लेकिन क्योंकि वह अलग हो जाती है इसलिए उसे 'प्रज्ञा' कहा गया है।

प्रश्नकर्ता : तो इसमें बेस है श्रद्धा, प्रतीति जो आप कहते हैं, वह।

दादाश्री : हाँ, प्रतीति बेस है। इसका मतलब इस जगत् की प्रतीति उल्टी बैठी है या सीधी बैठी है, उस अनुसार चला सब। उल्टी बैठी हुई प्रतीति इस संसार में भटकाती ही रहती है और सीधी प्रतीति बैठी यानी मोक्ष में ले जाएगी। प्रतीति बैठाने वाले निमित्त की ज़रूरत है।

संबंध, सूझ और प्रज्ञा के बीच

प्रश्नकर्ता : तो यह जो कुदरती सूझ है, उसका प्रज्ञा से क्या संबंध है?

दादाश्री : यह जो सूझ है, वही प्रज्ञा की ओर ले जाती है। हाँ, वह सूझ ही काम करती है। इसमें कुदरती रूप से कोई काम करता है तो वह सिर्फ सूझ है, अज्ञान दशा में सूझ ही काम करती है।

प्रश्नकर्ता : वह प्रज्ञा का भाग नहीं है?

दादाश्री : नहीं! सूझ अर्थात् उतने आवरण खुल गए ऐसा कहलाता है।

प्रश्नकर्ता : सूझ को प्रज्ञा कह सकते हैं?

दादाश्री : नहीं! प्रज्ञा वह ज्ञान है जबकि यह सूझ तो दर्शन है। अज्ञा को बुद्धि कहा जाता है। हमें तो दिखाई देता है। आगे-पीछे का सभी, पीछे क्या हो रहा है, वह भी दिखाई देता है। अगर कोई कहे, 'मैं पीछे खड़ा हूँ, मैंने हाथ ऊँचा किया या नहीं?' वैसा नहीं दिखाई देता। स्थूल नहीं दिखाई देता। सूक्ष्म दिखाई देता है। जो सूक्ष्म विभाग है न, वह सारा दिखाई देता है। समझ की वजह से वह दिखाई देता है। यह स्थूल तो, जब संपूर्ण केवलज्ञान हो जाता है, तब दिखाई देता है।

मैंने तो देखा है न छत से लेकर तले तक सारा। नीचे भी देखा है कि नीचे कैसा है? ऊपर कैसा है? परस्पेक्टिव (परिप्रेक्ष्य) कैसा है, सभी तरफ से देख लिया इसलिए पता चल गया कि

यह बात तो ऐसी है। परस्पेक्टिव व्यू बहुत कम लोग देख सकते हैं। यों सामने खड़े रहना और परस्पेक्टिव व्यू से देखना, दोनों एक साथ नहीं हो सकता। हमें वह आता है।

प्रश्नकर्ता : दादा, उसे सूझ कह सकते हैं?

दादाश्री : नहीं! वह दर्शन है। सूझ तो हर एक व्यक्ति में होती है। सूझ तो हर एक में अपनी शक्ति के अनुसार होती है। दर्शन फैला हुआ है न, जिसका विस्तार हुआ है, वह है दर्शन। उसकी तो बात ही अलग है न! हाँ, इतने सारे कड़वे अनुभवों के बीच भी वह आनंद में रखता है, उसकी तो बात ही अलग है न!

प्रज्ञा और सूझ में फर्क

प्रश्नकर्ता : सूझ और प्रज्ञा में क्या फर्क है?

दादाश्री : प्रज्ञा, वह परमानेन्ट वस्तु है और सूझ 'चेन्ज' होती रहती है। जैसे-जैसे आगे बढ़ता है, वैसे-वैसे सूझ 'चेन्ज' होती रहती है। प्रज्ञा, वह 'टेम्परेरी परमानेन्ट' वस्तु है। जब तक संपूर्णपद प्राप्त नहीं हो जाता, सिद्धदशा नहीं हो जाती, तभी तक प्रज्ञा रहती है। प्रज्ञा स्वरूपज्ञान के बाद ही उत्पन्न होती है; जबकि सूझ तो हर एक को समसरण मार्ग के मील पर उत्पन्न होने वाली बख़्शीश है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन सूझ तो आत्मा का 'डायरेक्ट' प्रकाश है न?

दादाश्री : नहीं, वह 'डायरेक्ट' प्रकाश नहीं है। लेकिन अंतरसूझ, वह तो कुदरत की एक प्रकार की 'गिफ्ट' है। वह संसार में किस प्रकार से रहना और किस प्रकार से नहीं, वह सब चलाती रहती है।

प्रश्नकर्ता : सूझ में बुद्धि नहीं आती?

दादाश्री : नहीं। बुद्धि तो फायदा और नुकसान ही दिखाती है, बाकी कुछ नहीं दिखाती।

प्रश्नकर्ता : तो प्रज्ञा और सूझ में क्या फर्क है?

दादाश्री : सूझ तो हर एक में होती हैं। जानवरों में भी होती हैं। छोटा बच्चा होता है न, तो वह अपनी सूझ के अनुसार घूमता रहता है। पिल्लों में भी सूझ होती हैं, प्रज्ञा नहीं होती। प्रज्ञा, वह तो ज्ञान का प्रकाश होने के बाद उत्पन्न होने वाली वस्तु है।

ज्ञान के बाद प्रज्ञा का ही काम

प्रश्नकर्ता : तो दादा से जो (लोग) ज्ञान लेते हैं, उन्हें फिर जो मोक्षमार्ग में मदद करते रहते हैं, उसमें सूझ का स्थान है क्या?

दादाश्री : वह प्रज्ञा का काम है। फिर प्रज्ञा का काम रहता है। ज्ञान लिया, उस दिन सूझ फुल (संपूर्ण) हो जाती है, केवलदर्शन के रूप में हो जाती है। फिर सूझ विकसित होनी बाकी नहीं रहती। उसके बाद उलझन ही नहीं होती न!

प्रश्नकर्ता : उसके बाद प्रज्ञा मदद करती है?

दादाश्री : हाँ, बस।

प्रश्नकर्ता : जिन्हें आपका ज्ञान प्राप्त हुआ है, उन्हें अब जो ठेठ मोक्ष तक का प्रवेश द्वार दिखाती है, उलझनों का निपटारा करवाती है, वह काम सूझ की जगह पर प्रज्ञा करती है?

दादाश्री : वह प्रज्ञा है। सूझ तो संपूर्ण हो गई अपनी, क्षायक हो गया। अब, प्रज्ञा वह दिखाती है। जब सूझ संपूर्ण हो जाती है तब क्षायक समकित कहलाता है, केवलदर्शन कहलाता है। सूझ संपूर्ण हो जाती है फिर सूझ का काम पूरा हो जाता है।

प्रज्ञा और प्रतिष्ठित आत्मा में फर्क

प्रश्नकर्ता : प्रज्ञा और प्रतिष्ठित आत्मा में फर्क है क्या?

दादाश्री : बहुत फर्क है। प्रतिष्ठित आत्मा तो यह जो 'चंदूभाई' है, वह है और प्रज्ञा तो आत्मा का एक विभाग है।

प्रश्नकर्ता : यह जो प्रज्ञा है, वह प्रतिष्ठित आत्मा को सचेत करती है?

दादाश्री : हाँ, वह प्रतिष्ठित आत्मा के अहंकार वाले भाग को सचेत करती है। हाँ, जिसे मुक्त होना है, उस भाग को। बंधने वाला अहंकार और मुक्त होने वाला अहंकार। वह मुक्त होने वाले अहंकार को सचेत करती है।

प्रश्नकर्ता : तो वास्तव में वह चंदूभाई को ही सचेत करती है न, ऐसा ही हुआ न?

दादाश्री : नहीं! अहंकार को। चंदूभाई नाम का जो मालिक है, अहंकार। अहंकार दो प्रकार के हैं। एक, वह अहंकार जिसने यह खड़ा किया, वह अहंकार चला गया। यह वह अहंकार है जो मुक्त होने के लिए वापस लौट रहा है...

प्रश्नकर्ता : उसे सचेत करती है?

दादाश्री : हाँ! अर्थात् जो मुक्त होना चाहता है, उसे हेल्प मिल गई। बाकी, जो मुक्त होना चाहता है, ऐसा अहंकार हर एक में है तो सही लेकिन जब तक उसमें प्रज्ञा उत्पन्न नहीं होगी, तब तक कौन कहेगा? इसलिए उलझा रहता है।

शुद्धात्मा, प्रतिष्ठित आत्मा और प्रज्ञा

प्रश्नकर्ता : शुद्धात्मा और प्रतिष्ठित आत्मा के बीच संबंध प्रज्ञा के माध्यम से है?

दादाश्री : दोनों का संबंध? हमें प्रज्ञा से संबंध है। (जिन्होंने ज्ञान नहीं लिया है) उन लोगों में प्रज्ञा ही नहीं होती। उनमें अज्ञा से संबंध है।

प्रश्नकर्ता : आत्मा के साथ अज्ञान का संबंध है क्या?

दादाश्री : आत्मा को अज्ञान स्पर्श कर ही नहीं सकता न! प्रकाश को अंधेरा छू कैसे पाएगा? वह तो आधार रहित कहलाएगा जबकि यह (आत्मा) तो खुद के आधार पर खड़ा है।

प्रश्नकर्ता : खुद के अर्थात् क्या?

दादाश्री : अर्थात् खुद के गुणधर्मों के आधार पर। *पुद्गल* खुद के गुणधर्मों के आधार पर। प्रतिष्ठित आत्मा यानी पावर। पावर वाला खत्म हो जाएगा जबकि मूल 'वस्तु' को कुछ भी नहीं होता। बस, इसके अलावा कुछ भी नहीं है।

प्रश्नकर्ता : यह प्रतिष्ठित आत्मा मूल वस्तु में से उत्पन्न हुआ है?

दादाश्री : हाँ, लेकिन ऐसा संयोगवश हुआ।

प्रश्नकर्ता : जो प्रकृति को जानता है और प्रकृति के आधार पर चलता है, वह कौन है?

दादाश्री : वह अहंकार है, बस। प्रकृति को जानता है। जब उस पर सोचने बैठता है तब सभी कुछ जानता है।

किस वजह से ये दोष हुए, वह यह सबकुछ जानता है। कुछ ही भाग नहीं जानता। बाकी सबकुछ जानता है। निन्यानवे तक जान सकता है, सौ तक नहीं जान सकता। बुद्धि का बहुत ज़्यादा विकास करे तो निन्यानवे तक जान सकता है। लेकिन इसके बावजूद भी उस अहंकार से काम नहीं हो सकता, शुद्ध की ही आवश्यकता है।

प्रश्नकर्ता : जो खुद को जानता है और खुद के आधार पर चलता है, वह कौन है?

दादाश्री : वह अपनी प्रज्ञाशक्ति है। वह खुद अपने प्रकाश से ही जान रही है। चलना अर्थात् भाषा में जिसे चलना कहते हैं, वह नहीं। वह व्याप्त होती है!

ध्येय शुद्धात्मा, ध्याता प्रज्ञा

प्रश्नकर्ता : ध्याता, ध्येय और ध्यान किसे कहा जाता है? शुद्धात्मा ध्याता है या प्रतिष्ठित आत्मा?

दादाश्री : इस ज्ञान प्राप्ति के बाद प्रज्ञा ध्याता है, प्रतिष्ठित आत्मा भी ध्याता नहीं है। प्रज्ञा ध्याता है। ध्येय वह 'खुद' है। 'मैं शुद्धात्मा हूँ', वह ध्येय है। ध्याता और ध्येय की एकता हो जाने से अंदर ध्यान उत्पन्न होता है।

प्रश्नकर्ता : अभी शुद्धात्मा को ध्याता नहीं कह सकते?

दादाश्री : शुद्धात्मा (केवलज्ञानी आत्मा) तो अपना ध्येय है। शुद्धात्मा होना, वह अपना ध्येय है। शुद्धात्मा ही परमात्मा है, उसे जो भी कहो, वह यही है। प्रज्ञा ध्याता है और शुद्धात्मा ध्येय है क्योंकि आपको जो यह शुद्धात्मा पद दिया है, वह प्रतीति पद दिया हुआ है। आप शुद्धात्मा हो नहीं गए हो। लेकिन अगर अपलक्षण खड़े हो तो आप अपने आपके लिए ऐसा मत मान लेना कि मेरा बिगड़ गया है। इसलिए शुद्धात्मा कहा है।

अभी उस शुद्धात्मा को प्रज्ञा स्वरूप कहो या अंतरात्मा दशा कहो, दशा अंतरात्मा कहलाएगी। लेकिन अंतरात्मा दशा कब तक है, प्रज्ञा स्वरूप कब तक है कि जब तक फाइलों का *निकाल* करना बाकी है तभी तक। फाइलों का *निकाल* हो जाने के बाद तो फिर फुल गवर्नमेन्ट अर्थात् परमात्मा।

प्रज्ञा से शुद्धात्मा के साथ अभेदता

प्रश्नकर्ता : ज्ञान लेने के बाद जो प्रज्ञा दृष्टि खिलती है, उस प्रज्ञा दृष्टि का शुद्धात्मा से कोई रिलेशन है?

दादाश्री : वही मूल, मूल शुद्धात्मा की शक्ति की शुरूआत ही वहाँ से होती है। वह शुद्धात्मा का अंश है। उसका भाग है।

हम शुद्धात्मा देते हैं तब आपके भीतर प्रज्ञा को बैठा देते हैं। उस प्रज्ञा से सभी एक ही हैं लेकिन बुद्धि से हम अलग-अलग हैं।

अभी जो जुदाई है न, शुद्धात्मा और आपमें कितना भेद है, कि अभी प्रतीति से शुद्धात्मा हुए हैं। संपूर्ण श्रद्धा बैठ गई है, 'मैं शुद्धात्मा हूँ', वह विश्वास हो गया है। थोड़ा बहुत अनुभव हो गया है, लेकिन उस जैसे (रूप) हुए नहीं हैं। अतः भगवान से ऐसा कहते हैं कि उसी जैसा (रूप) बना दो, वही अभेदता है।

प्रश्नकर्ता : अर्थात् बिल्कुल भी भेद नहीं।

दादाश्री : भेद है, अभी भेद है। अभी मुझे आपको शुद्धात्मा में लाना पड़ता है। बाद में लाना नहीं पड़ेगा। अभेद हो जाना है।

प्रश्नकर्ता : अहंकार शुद्धात्मा के साथ अभेद होता है न?

दादाश्री : नहीं, अहंकार नहीं। व्यवहार का *निकाल* करने के लिए यह जो प्रज्ञा अलग हुई है न, तो अब जब वह एक हो जाएगी तो काम हो जाएगा।

प्रश्नकर्ता : कौन किसके साथ अभेद होता है?

दादाश्री : प्रज्ञा और शुद्धात्मा। ये दोनों जो अलग हैं, वे एक हो जाएँगे। अभी 'मैंपन' प्रज्ञा

में बरतता है। हम जिसमें बरतते हैं, वह प्रज्ञा में बरतते हैं। अब अहंकार में नहीं बरतते। अत: 'मैं' चंदूभाई में बरतता था, तब अहंकार में कहलाता था। अभी प्रज्ञा में बरतता है। अर्थात् शुद्धात्मा नहीं, यानी कि वह, जिसे अंतरात्मा कहा गया है।

हमारी यह प्रज्ञा लगभग ऐसी ही है जैसे आत्मा में स्थिर हो गई हो। अत: हमें 'शुद्धात्मा' बोलना नहीं पड़ता या सोचना नहीं पड़ता कुछ भी। और उस रूप में अभेदता जैसा ही लगता है। ज़रा सा बाकी है, चार डिग्री की वजह से। जबकि आपको अभेद होना है। धीरे-धीरे-धीरे करके जैसे-जैसे इन फाइलों का *निकाल* होता जाएगा, वैसे-वैसे अभेद होता जाएगा। फाइलों का पूर्ण रूप से *निकाल* हो गया तो समझो अभेद हो गया। फाइलों की ही झंझट है यह सारी। लेकिन अभी वह (खुद - शुद्ध ज्ञान) प्रज्ञा के रूप में है और प्रज्ञा भगवान का अंश है। जब काम पूर्ण हो जाएगा तब वापस उसमें समा जाएगी। भगवान और आत्मा एक ही हैं। आत्मा जब भौतिक में से छूटकर खुद के स्वरूप में ही रहता है, तब परमात्मा कहलाता है। निरंतर स्वरूप की रमणता, वही परमात्मा है और जब तक स्वरूप की रमणता भी है और यह रमणता भी है, तब तक अंतरात्मा। वही प्रज्ञा है।

अंतिम मोक्ष में बिठा देती है प्रज्ञा

प्रश्नकर्ता : यह ज्ञान लेने के बाद महात्माओं को ऐसा रहता है कि वह खुद शरीर से जुदा है। शुद्धात्मा का *लक्ष* बैठ गया है और उसके बाद देखने की जो सभी क्रियाएँ चलती रहती हैं, वे सब प्रज्ञा से होती हैं न?

दादाश्री : सारा प्रज्ञाशक्ति का ही काम है।

प्रश्नकर्ता : तो इसका अर्थ यह हुआ कि ज्ञान क्रिया से देखना, वह तो बहुत दूर रहा?

दादाश्री : वही, अभी प्रज्ञाशक्ति की ही ज्ञान क्रिया है। जो वास्तविक ज्ञान क्रिया है, वह तो जब इन सभी फाइलों का *निकाल* हो जाएगा तब वह ज्ञान क्रिया हो पाएगी।

प्रश्नकर्ता : आप्तवाणी में पढ़ा है कि जो अशुद्ध है, अशुभ है, शुभ है, उन सभी क्रियाओं को जो जानती है, वह बुद्धि क्रिया है और जो सिर्फ शुद्ध को ही जानती है, वह ज्ञान क्रिया है। इसलिए मुझे ऐसा लगा कि हमारी प्रज्ञा सब देखती है।

दादाश्री : हाँ, प्रज्ञा से। वह जो प्रज्ञा है, वह कुछ हद तक, जब तक फाइलों का *निकाल* करते हैं तब तक प्रज्ञा रहती है। फाइलें खत्म हो जाने के बाद आत्मा ही खुद जानता है।

प्रश्नकर्ता : इसका मतलब यह प्रज्ञा मोक्ष के दरवाज़े तक मदद करने के लिए है?

दादाश्री : दरवाज़े तक नहीं, मोक्ष में अंत तक बिठा देती है। हाँ, पूर्णाहुति करवाने वाली यह प्रज्ञा ही है।

प्रश्नकर्ता : मोक्ष में जाने के बाद प्रज्ञाशक्ति वापस आती है?

दादाश्री : नहीं, वह शक्ति मोक्ष में पहुँचाने तक ही रहती है (यानी 'केवलज्ञान होने तक ही' समझना है)!

'प्रज्ञा' वही केवलज्ञान के अंश

केवलज्ञान के अंश स्वरूप के भाग को हम 'प्रज्ञा' कहते हैं। प्रज्ञा ज्ञान पर्याय है। जैसे-जैसे आवरण हटते जाते हैं, वैसे-वैसे प्रकाश बढ़ता जाता है और उतना ही अंशत: केवलज्ञान बढ़ता जाता है। संपूर्ण केवलज्ञान तो 360 अंश पूरे हो जाएँ, तब होता है।

जैसे एक मटके में हज़ार वॉट का बल्ब लगाया हो और मटके का मुँह बंद कर दिया हो, तो प्रकाश मिलेगा क्या? नहीं मिलेगा। ऐसा इस मूढ़ात्मा का है। भीतर तो अनंत ज्ञान प्रकाश है, लेकिन आवृत होने से घोर अंधकार है। ज्ञानी पुरुष की कृपा से, उनकी सिद्धि के बल से, मटके में यदि ज़रा सा छेद हो जाए, तो पूरे कमरे में प्रकाश हो जाता है। उतना आवरण टूट जाता है और उतना डायरेक्ट प्रकाश प्राप्त होता है। जैसे-जैसे आवरण टूटते जाते हैं, जैसे-जैसे अधिक छेद होते जाते हैं, वैसे-वैसे प्रकाश बढ़ता जाता है और जब पूरा मटका टूट जाता है और बल्ब से अलग हो जाता है तब संपूर्ण प्रकाश चारों और फैल जाता है! जगमगाहट हो जाती है!

यह जो डायरेक्ट ज्ञानकिरण फूटती है, वही प्रज्ञा कहलाती है। जब सारे आवरणों से आत्मा मुक्त हो जाता है, तब उसे सारे ब्रह्मांड को प्रकाशित करने की शक्ति प्राप्त होती है। सारे ब्रह्मांड को प्रकाशित करता है। दूसरे शब्दों में सारे ब्रह्मांड के ज्ञेयों को देखने-जानने की जो शक्ति प्राप्त होती है, वही केवलज्ञान कहलाता है।

समझ की पूर्ण दशा, वह 'प्रज्ञा'

हम यह जो ज्ञान देते हैं न, वह केवलदर्शन का ज्ञान देते हैं, क्षायक समकित का ज्ञान देते हैं। वह केवलज्ञान नहीं है परंतु आज्ञारूपी केवलज्ञान है और केवलदर्शन वाला ज्ञान है। अत: ज्ञान, दर्शन, चारित्र और तप, ये चारों इस ज्ञान में हैं। फिर इससे आगे का क्षायक ज्ञान कब होता है? यदि हमारी आज्ञा में रहे तो। उससे वह समझ फिर वर्तन में आती है तब क्षायक ज्ञान होता है।

अपना यह 'केवलदर्शन' है यानी कि केवल समझ का विज्ञान है। उसके बाद केवलज्ञान में आता है। आपको जो समझ में आया है, वह अनुभव में नहीं आया है। अत: समझ में नहीं था ऐसा नहीं कह सकते। जो समझ में आता है, वह दर्शन है और जो अनुभव में आ जाता है, वह ज्ञान है।

प्रश्नकर्ता : आप जो समझाते हैं, वह किसे पहुँचता है? देह को या आत्मा को?

दादाश्री : आत्मा को ही न! पर वह कौन सा आत्मा? जो शुद्धात्मा है, वह नहीं, प्रज्ञा नाम की जो शक्ति है, उसके साथ सत्संग चलता रहता है। देह को भी नहीं, देह और आत्मा दोनों के बीच की जो शक्ति है, उसे पहुँचता है। प्रज्ञाशक्ति ही समझती है यह। यहाँ जो समझाते हैं, उसे जो ग्रहण करती है, वह प्रज्ञाशक्ति है।

प्रज्ञा और समझ में खास अंतर नहीं है। समझ 'फूल' (संपूर्ण) दशा में हो तब प्रज्ञा कही जाती है। संसार में सभी तरह की सूझ पड़ती है लेकिन जब तक खुद की सूझ नहीं पड़ती कि 'मैं कोन हूँ', तब तक 'केवलदर्शन' नहीं होता।

प्रज्ञाशक्ति कब तक रहती है? जब हमें यह ज्ञान मिलता है, तब आत्मा हो जाते हैं, लेकिन अभी तक आत्मा श्रद्धा में, प्रतीति में, दर्शन में है लेकिन ज्ञान में नहीं आया है, जब तक यह चारित्र में नहीं आया है तब तक प्रज्ञाशक्ति काम करती रहती है।

प्रज्ञा सचेत करती है, जागृति पकड़ लेती है

प्रश्नकर्ता : प्रज्ञाशक्ति और जागृति में कोई फर्क है?

दादाश्री : जागृति जब फुल (पूर्ण) हो जाती है न, अर्थात् प्योर होते-होते जब फुल हो जाती है, तब केवलज्ञान कहलाता है। फिर प्रज्ञाशक्ति खत्म हो जाती है। प्रज्ञाशक्ति हमें मोक्ष में जाने तक हेल्प करती है। आत्मा तो निरंतर केवलज्ञान ही है। उजाले को कुछ भी स्पर्श नहीं करता।

प्रश्नकर्ता : अर्थात् अंत (केवलज्ञान होने) तक जागृति और प्रज्ञाशक्ति रहती है?

दादाश्री : हाँ, प्रज्ञाशक्ति और जागृति, दोनों साथ में चलते हैं। प्रज्ञाशक्ति उसे समझाती रहती है और जागृति उसे पकड़ लेती है।

प्रज्ञा के प्रकाश से, दिखाई देते हैं दोष

प्रज्ञा तो आत्मा का एक अंग है, वह आत्मा का और बाहर का संधान करवाती है। शुद्धात्मा तो शुद्ध ही है, लेकिन प्रज्ञा क्या करती है, कि व्यवहार, व्यवहार में रहे और त्यौहार, त्यौहार में रहे और खुद को शुद्धात्मा में रखती है। प्रज्ञा तो निरंतर संसार में से निकालकर मोक्ष की तरफ ले जाती है। आत्मा के अनंत प्रदेश हैं, उन सभी पर आवरण हैं। आपको ज्ञान दिया है इसलिए प्रतिदिन जैसे-जैसे आवरण टूटते जाते हैं, वैसे-वैसे प्रकाश बढ़ता जाता है, दोष दिखते जाते हैं। और जितने दोष दिखते हैं, उतने भाग जाते हैं। यह तो पूरा दोषों से भरा हुआ पुतला है और सभी दोषों के खत्म होने के बाद, मोक्ष होगा! ज्ञान मिलने के बाद चंदूभाई और आप 'खुद' जुदा हो जाते हो, फिर प्रज्ञा से चंदूभाई के दोष दिखते जाते हैं। जितने दोष दिखें, उतने चले जाते हैं। 'ज्ञान' नहीं था, तब निरे दोष ही ग्रहण हो रहे थे, नहीं डालने होते, फिर भी घुस जाते थे। अब ज्ञान के बाद दोष छूटते जाते हैं और जितने दोषों ने विदाई ली, आप उतने वीतराग होते जाते हो! अंत में परमात्मा स्वरूप हो जाना चाहिए, लेकिन आत्मस्वरूप हुए बिना सच्ची समझशक्ति नहीं आती। वीतराग आत्मस्वरूप हो चुके थे और इसलिए समझ-बूझकर दोषों का *निकाल* किया और मोक्ष में गए!

दादा के पास बैठकर समझ लेना पड़ेगा

प्रश्नकर्ता : इस जन्म में ही ज्ञान से हमारा उल्टा आचरण स्टॉप (बंद) हो जाएगा या नहीं?

दादाश्री : हो भी सकता है! 'ज्ञानी पुरुष' के कहे अनुसार करे तो पाँच-दस वर्ष में हो सकता है। अरे, एकाध वर्ष में भी हो सकता है! 'ज्ञानी पुरुष' तो तीन लोक के नाथ कहे जाते हैं। वहाँ पर क्या नहीं हो सकता? कुछ बाकी रहेगा क्या?

इन दादा के पास बैठकर सबकुछ समझ लेना पड़ेगा। सत्संग के लिए टाइम निकालना पड़ेगा।

'अमे केवलज्ञान प्यासी,
दादाने काजे आ भव देशुं अमे ज गाळी...'

- नवनीत

इन्हें तृषा किसकी लगी है? तब वे कहते हैं, 'केवलज्ञान की ही तृषा है। हमें अब दूसरी कोई तृषा रही नहीं। तब हम उसे कहें, 'अंदर रही है तृषा, उसकी गहराई से जाँच तो कर।' तब कहता है, 'वह तो प्रकृति में रही है, मुझमें नहीं रही। प्रकृति में तो किसी को चार आना रह गई हो, किसी को आठ आना रही होती है, तो किसी को बारह आने रही होती है, तो बारह आने वाले को भगवान दंड देते होंगे?' तब कहे, 'नहीं भाई, तेरी जितनी कमी है, उतनी तू पूरी कर।'

अब जब तक प्रकृति है तब तक उसकी सभी कमियाँ पूरी हो ही जाएँगी। यदि दख़ल नहीं करोगे तो प्रकृति कमी पूरी कर ही देगी। प्रकृति खुद की कमी खुद पूरी करती है। अब इसमें 'मैं करता हूँ' कहा कि दखल हो जाएगी!

'ज्ञान' नहीं लिया हो तो प्रकृति का पूरे दिन उल्टा ही चलता रहता है, और अब तो सीधा ही चलता रहता है। तू सामने वाले को खरी-खोटी सुना दे लेकिन अंदर कहेगा कि, 'नहीं, ऐसा नहीं करना चाहिए। खरी-खोटी सुनाने का विचार आया, उसका प्रतिक्रमण करो।' और ज्ञान से पहले तो सुना देता था और ऊपर से कहता था कि ज़्यादा सुनाने की ज़रूरत है।

यानी अभी जो अंदर चलता रहता है वह समकित बल है! ज़बरदस्त समकित बल है। वह रात-दिन निरंतर काम करता ही रहता है!

प्रश्नकर्ता : वह सब काम प्रज्ञा करती है?

दादाश्री : हाँ, वह काम प्रज्ञा कर रही है। प्रज्ञा, खींच-खींचकर भी मोक्ष में ले जाएगी।

प्रश्नकर्ता : लेकिन दादा, प्रकृति का फोर्स कई बार बहुत आता है?

दादाश्री : वह तो जितनी भारी प्रकृति होगी उतना फोर्स अधिक होगा।

प्रश्नकर्ता : परंतु उस समय 'ज्ञान' भी उतना ही ज़ोरदार चलता है।

दादाश्री : हाँ, 'ज्ञान' भी ज़ोरदार चलता है। यह 'अक्रम विज्ञान' है, इसलिए मारपीट करके, लड़कर भी ठिकाने ला देगा!

प्रज्ञा खिलने पर बदलता है वर्तन

सत्संग से प्रज्ञाशक्ति खिलती है। जैसे-जैसे प्रज्ञा खिलती जाती है, वैसे-वैसे वर्तन में बदलाव आता जाता है। जब वर्तन बदलता है, तब भार कम लगता है। 'खुद का' और 'पराया', इस प्रकार होम डिपार्टमेन्ट और फॉरेन डिपार्टमेन्ट दोनों को अलग ही रखती है, वह प्रज्ञा है, वही आत्मा है, वही चारित्र है। वर्तन ही चारित्र है। वर्तन अर्थात् वह कि 'स्व' और 'पर' को एकाकार नहीं होने दे।

जो पराया है, उसे कभी भी खुद का नहीं मानने दे और खुद का है उसे कभी भी पराया नहीं मानने दे, वह प्रज्ञा है! किंचित्मात्र भी पराई चीज़ को खुद की नहीं माने तो वह परमात्मा ही है। 'खुद' का और 'पराया' अलग रखने की श्रद्धा है, लेकिन वर्तन में नहीं है-वह प्रज्ञा है, ऐसी श्रद्धा ही प्रज्ञा है और ऐसा वर्तन ही आत्मा है, वही चारित्र है। वर्तन यानी आत्मा और अनात्मा को एकाकार नहीं होने दे, वह।

प्रज्ञाशक्ति को कोई रुकावट न आए, इसलिए ज्ञानी पुरुष का अनुसरण करने से, वह शक्ति मज़बूत होती जाएगी। इस शक्ति को कोई परेशानी नहीं आनी चाहिए। अभी तो बस आई ही हो और अगर कोई परेशानी आ गई तो चली जाएगी।

प्रज्ञा पालन करवाती है पाँच आज्ञा

प्रश्नकर्ता : प्रज्ञा का ज़ोर लाना हो तो क्या करना चाहिए?

दादाश्री : इन पाँच आज्ञाओं का पालन करने से प्रज्ञा हाज़िर हो जाती है, अन्य कुछ नहीं। आपको आज्ञा में रहने का जो होता है, वह आप पूछते हो कि ऐसा किस वजह से होता है? वह प्रज्ञा करती है। जो प्रकाश देती है, उसका नाम प्रज्ञा रखा गया है।

यह ज्ञान मिलने के बाद प्रज्ञा तो तुरंत ही काम करने लगती है, उसके बाद 'उसका' (खुद का) पुरुषार्थ किस तरफ है! पुरुषार्थ अर्थात् पाँच आज्ञा का पालन करना। पुरुष होने के बाद पुरुषार्थ नहीं करे तो उसकी खुद की ही भूल है न! ज्ञान मिलने के बाद पुरुष हो गया, ऐसा कहा जाएगा। और पुरुष होने के बाद आज्ञा पालन करने से वह पुरुषोत्तम होता जाता है। जो पुरुषोत्तम हो जाए, वही परमात्मा है। रास्ता सुव्यवस्थित हाईवे ही है न!

प्रश्नकर्ता : आज्ञा का पालन कौन करता है, प्रतिष्ठित आत्मा ही पालन करता है न?

दादाश्री : प्रतिष्ठित आत्मा के लिए आज्ञा पालन का प्रश्न ही कहाँ है इसमें? यह तो आपको जो आज्ञा का पालन करना है, वह आपका जो प्रज्ञा स्वभाव है, वही आपसे सबकुछ करवाता है। आत्मा की प्रज्ञा नामक शक्ति है, तो फिर और क्या

रहा उसमें? बीच में किसी की दखल है ही नहीं न! आज्ञा का पालन करना है। अज्ञाशक्ति जो नहीं करने दे रही थी, वह प्रज्ञाशक्ति करने देती है। आज्ञा पालन करने से आपको प्रतीति में रहता है कि 'मैं शुद्धात्मा हूँ' और वह *लक्ष* में है लेकिन अनुभव में कम है। उस रूप हुए नहीं हो अभी। उसके लिए, जब पाँच आज्ञा का पालन करोगे तब उस रूप हो पाओगे। अत: अन्य कुछ भी करना बाकी नहीं रहा।

अत: आज्ञा ही धर्म और आज्ञा ही तप। जब तक तप है, तब तक प्रज्ञा है। तब तक मूल स्वरूप नहीं है। आत्मा में वह तप नामक गुण है ही नहीं, प्रज्ञा तप करवाती है।

रियल-रिलेटिव की जागृति से बढ़ता है प्रज्ञाबल

प्रश्नकर्ता : प्रज्ञा का बल कैसे बढ़ता है?

दादाश्री : प्रज्ञा का बल तो जितनी आप आज्ञा पालन करोगे न (उतना बढ़ेगा)। ये पाँच आज्ञा दी हैं न, रिलेटिव-रियल देखना, व्यवस्थित शक्ति तो आपको समझ में आ गई है। व्यवस्थित समझ में आ गया है न? और फिर फाइलों का समभाव से *निकाल* करना। बस, इन पाँच आज्ञा का पालन करें न, उससे वह प्रज्ञाशक्ति अंदर बढ़ती जाएगी। ये प्रोटेक्शन के लिए दी गई हैं, इस ज्ञान को प्रोटेक्ट करने के लिए। क्योंकि यदि बाड़ न लगाए तो बकरें खा जाएँगे। वह छोटा सा पौधा अभी इतना सा है। इसलिए यह प्रोटेक्शन के लिए बाड़ है। एक घंटा रिलेटिव-रियल देखने का अभ्यास कर लेना। वह अभ्यास पहले का... अन्अभ्यास है इसलिए यह अभ्यास नहीं होता है। अन्अभ्यास बहुत काल से है, इसलिए इस अभ्यास का हैन्डल मारने से, फिर सहज ही हो जाएगा। फिर हमें हैन्डल नहीं मारना पड़ेगा। ज़रा सा बाहर निकले न, कि सबकुछ दिखाई देता ही रहेगा। जैसा है वैसा यथार्थ दिखाई देगा।

ज्ञान, विज्ञान और प्रज्ञा

प्रश्नकर्ता : ज्ञान और प्रज्ञा में फर्क क्या है?

दादाश्री : प्रज्ञा तो ज्ञान से उत्पन्न होने वाली एक शक्ति है।

प्रश्नकर्ता : ज्ञान, विज्ञान और प्रज्ञा, इन तीनों के बीच में क्या भेद है?

दादाश्री : ज्ञान अर्थात् जो खुद को करना पड़े। जितना जानते हैं उतना खुद को करना पड़ता है और विज्ञान अपने आप ही हो जाता है, हमें करना नहीं पड़ता और प्रज्ञा इन दोनों के बीच की स्थिति है। एक बार आप वैज्ञानिक तरीके से समझ गए कि इस दवाई को पीने से इंसान मर ही जाता है। तो आप वापस कभी भी वह दवाई नहीं पीओगे। और यों ही अगर कोई आपसे कहे, कि यह दवाई पोइज़नस है और इस दवाई से मर जाते हैं, तो भी इंसान पी लेता है। अत: जो ज्ञान क्रियाकारी है, वह वैज्ञानिक ज्ञान कहलाता है। जो ज्ञान क्रियाकारी होता है, स्वयं क्रियाकारी, वह है विज्ञान। और जो ज्ञान क्रियाकारी नहीं है, खुद को करना पड़ता है, वह ज्ञान है। 'दया रखो, शांति रखो', वह करना पड़ता है। वह फिर खुद से हो नहीं पाता, वह ज्ञान कहलाता है।

अत: शास्त्रों में ज्ञान है, शास्त्रों में विज्ञान नहीं है। शास्त्रों में शास्त्रज्ञान है जबकि 'यह' विज्ञान है। इसलिए चेतन ज्ञान अंदर काम करता रहता है, वह ज्ञान ही काम करता रहता है जबकि शास्त्रों का ज्ञान चाहे कितना भी पढ़ो, रटो, लेकिन वह काम नहीं करता। हमें करना पड़ता है, जबकि यह विज्ञान तो अपने आप ही काम करता रहता है। अंदर से जागृति देता है, सबकुछ अपने आप ही होता रहता है। आपमें करता है न, सबकुछ अपने आप? उसे कहते हैं विज्ञान। विज्ञान का अर्थ क्या है? चेतन ज्ञान, जो ज्ञान चेतन है, वह

जाग्रत हुआ है, वही विज्ञान है और वही आत्मा है। अभी प्रज्ञा के रूप में है। जब प्रज्ञा अपना काम पूरा कर लेगी, जब इन फाइलों का *निकाल* हो जाएगा तो प्रज्ञा खुद के स्वस्वरूप हो जाएगी, परमात्मा स्वरूप में।

प्रश्नकर्ता : प्रज्ञा स्व से अभिन्न कब है?

दादाश्री : अभी स्व से अभिन्न नहीं है, लेकिन यह कहने का भावार्थ क्या है? प्रज्ञा, वह खुद ही 'स्वरूप' है। अभी जब तक आत्मा प्रकट नहीं हुआ है, तब तक कुछ गुनाह होते ही तुरंत चेतावनी देने का काम प्रज्ञा का है। जब वीतरागता होती है, बाहर वाले गुनाह नहीं होते, तब फिर प्रज्ञा खुद ही 'स्वरूप' है।

वह प्रज्ञा है और वही मूल आत्मा है, लेकिन अभी वह प्रज्ञा मानी जाती है। मूल आत्मा की ऐसी कोई क्रिया नहीं होती, जो मोक्ष में ले जाए। प्रज्ञा अपना काम पूरा करने के बाद वापस जैसी थी वैसी ही आत्मा में स्थिर हो जाती है।

हमारी प्रज्ञाशक्ति ने देखा है अक्रम विज्ञान

यह विज्ञान है, इसलिए हमें इसका अनुभव होता है और भीतर से ही सावधान करता है। वहाँ (क्रमिक में) तो हमें करना पड़ता है जबकि यहाँ भीतर से ही सावधान करता है।

प्रश्नकर्ता : अब यह अनुभव हुआ है कि भीतर से चेतावनी मिलती है।

दादाश्री : अब हमें यह मार्ग मिल गया है और शुद्धात्मा की जो बाउन्ड्री (सीमा-रेखा) है, उसके पहले दरवाज़े में प्रवेश मिल गया है। जहाँ से कोई भी बाहर नहीं निकाल सकता। जहाँ से किसी को वापस निकालने का अधिकार नहीं है, ऐसी जगह आपने प्रवेश पाया है।

'ज्ञान' प्राप्ति के बिना प्रज्ञा की शुरुआत नहीं हो सकती है। या फिर अगर समकित प्राप्त हो जाए, तब प्रज्ञा की शुरुआत होती है। तो समकित में प्रज्ञा की शुरुआत किस प्रकार होती है? दूज के चंद्रमा जैसी शुरुआत होती है, जबकि अपने यहाँ तो पूर्ण प्रज्ञा उत्पन्न हो जाती है। फुल (पूर्ण) प्रज्ञा यानी वह फिर मोक्ष में ले जाने के लिए ही सचेत करती है। भरत राजा को तो चेताने वाले रखने पड़े थे, नौकर रखने पड़े थे। जो हर पंद्रह मिनट में कहते थे कि 'भरत राजा, चेत, चेत, चेत।' तीन बार आवाज़ लगाते थे। देखो, आपको तो अंदर से ही प्रज्ञा सावधान करती है। प्रज्ञा निरंतर सचेत करती रहती है, कि 'ऐ, ऐसे नहीं'। पूरे दिन सचेत करती रहती है।

प्रज्ञाशक्ति तो क्या कहती है? चेत और देख। अन्य कुछ दखल करने की ज़रूरत नहीं है। और यही है आत्मा का अनुभव! निरंतर, पूरे दिन आत्मा का अनुभव।

चाहे कैसे भी विकट संयोग आएँ तब हमारा ज्ञान हाज़िर हो जाता है, हमारी वाणी हाज़िर हो जाती है, हम हाज़िर हो जाते हैं और आप जागृति में आ जाते हैं। प्रतिक्षण जागृत रखे, ऐसा हमारा यह 'अक्रम ज्ञान' है।

'यह' विज्ञान किससे देखा है? 'प्रज्ञाशक्ति' से। संसार में बुद्धि से देखा हुआ ज्ञान काम का है, लेकिन अपने 'यहाँ' तो निर्मल ज्ञान चाहिए। अंत में जब बुद्धि रहित विज्ञान होगा तब काम होगा। 'अक्रम विज्ञान' किससे देख रहा है? प्रज्ञाशक्ति से!

प्रज्ञा, वह आत्मा की प्रतिनिधि है। आत्मा की 'पावर ऑफ एटर्नी' उसके पास है। इसलिए यह काम निकाल लेने जैसा है। यदि एक बार तार जुड़ गया हो, तो हमेशा के लिए हल आ जाएगा।

- जय सच्चिदानंद

आत्मज्ञानी पूज्य दीपकभाई के सानिध्य में सत्संग कार्यक्रम

अडालज

24 अक्तूबर (सोम) रात 8-30 से 10-30 - **दिपावली के अवसर पर विशेष भक्ति**
26 अक्तूबर (मंगण) सुबह 8 से 1 और शाम 5-30 से 7 - **नूतन वर्ष के अवसर पर पूजन-दर्शन-भक्ति**
24 से 31 दिसम्बर - पारायण (आप्तवाणी-14 भाग-3) - वाचन, सत्संग तथा प्रश्नोत्तरी
1 जनवरी - श्री सीमंधर स्वामी की छोटी प्रतिमाओं की प्राणप्रतिष्ठा
2 जनवरी - परम पूज्य दादाश्री की पुण्यतिथि पर विशेष कार्यक्रम

महेसाणा में परम पूज्य दादा भगवान का 115वाँ जन्मजयंती महोत्सव

3 नवम्बर (गुरु)	शाम 7 से	- **महोत्सव शुभारंभ (सांस्कृतिक कार्यक्रम)**
	शाम 8-30 से 10	- **सत्संग**
4-5 नवम्बर (शुक्र-शनि)	सुबह 10 से 12-30	- **सत्संग**
	शाम 7-30 से 10	- **सत्संग**
6 नवम्बर (रवि)	सुबह 10 से 12-30	- **सत्संग**
	शाम 4 से 7-30	- **ज्ञानविधि**
7 नवम्बर (सोम)	सुबह 8 से 1	- **जन्मजयंती के अवसर पर पूजन-दर्शन-भक्ति**
	शाम 5 से 7	- **जन्मजयंती के अवसर पर दर्शन**

स्थल : पांचोट बाईपास सर्कल, राधनपुर रोड़, महेसाणा. **संपर्क :** 9408551501

भरूच

22 नवम्बर (मंगण) शाम 7-30 से 10-30 - **सत्संग और 23 नवम्बर** (बुध) शाम 7 से 10-30 - **ज्ञानविधि**
24 नवम्बर (गुरु) शाम 7-30 से 10-30 - **आप्तपुत्र सत्संग**
स्थल : BAPS स्वामिनारायण मंदिर, NH-8, झाडेश्वर, भरूच. **संपर्क :** 9924348882

सुरत

25-26 नवम्बर (शुक्र-शनि) रात 8-30 से 11 - **सत्संग और 27 नवम्बर** (रवि) शाम 5-30 से 9 - **ज्ञानविधि**
28 नवम्बर (सोम) रात 8-30 से 11 - **आप्तपुत्र सत्संग**
स्थल : वीर नर्मद युनिवर्सिटी ग्राउन्ड, उधना-मगदला रोड़, सुरत. **संपर्क :** 9574008007

वलसाड

29 नवम्बर (मंगण) शाम 5-30 से 8-30 - **सत्संग और 30 नवम्बर** (बुध) शाम 5 से 8-30 - **ज्ञानविधि**
1 दिसम्बर (गुरु) शाम 5-30 से 8-30 - **आप्तपुत्र सत्संग**
स्थल : रेल्वे जीमखाना ग्राउन्ड, धरमपुर रोड़, कोन्वेन्ट स्कूल के सामने, वलसाड. **संपर्क :** 9924343245

त्रिमंदिरो के संपर्क : अडालज : 9328661166-77, **राजकोट :** 9924343478, **भूज :** 9924345588, **मुंबई :** 9323528901, **अंजार :** 9924346622, **मोरबी :** 9924341188, **सुरेन्द्रनगर :** 9737048322, **अमरेली :** 9924344460, **वडोदरा :** 9574001557, **गोधरा :** 9723707738, **जामनगर :** 9924343687. **अन्य सेन्टरों के संपर्क : अहमदाबाद (दादा दर्शन) :** 9574001445, **वडोदरा (दादा मंदिर) :** 9924343335, **दिल्ली :** 9810098564, **बैंगलूर :** 9590979099, **कोलकता :** 9830080820 **यु.एस.ए.-केनेडा:** +1 877-505-3232, **यु.के.:** +44 330-111-3232, **ऑस्ट्रेलिया:** +61 402179706

पूज्य नीरू माँ/पूज्य दीपक भाई को देखिए टी.वी. चैनल पर

भारत

- 'दूरदर्शन गिरनार' पर रोज़ सुबह 7-30 से 8-30, रात 9 से 10
- 'अरिहंत' चैनल पर हर रोज़ सुबह 2-50 से 3-50, दोपहर 2-30 से 3, रात 8 से 9
- 'वालम' पर हर रोज़ शाम 6 से 6-30 (सिर्फ गुजरात राज्य में)
- 'दूरदर्शन उत्तरप्रदेश' पर हर रोज़ सुबह 7-30 से 8, दोपहर 3 से 4 (हिन्दी में)
- 'साधना' पर हर रोज़ सुबह 7-50 से 8-15 तथा रात 9-30 से 9-55 (हिन्दी में)
- 'दूरदर्शन सह्याद्रि' पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-30, शनि-रवि सुबह 11-30 से 12, सोम से शुक्र दोपहर 3-30 से 4 (मराठी में)
- 'आस्था कन्नड़ा' पर हर रोज़ दोपहर 12 से 12-30 तथा शाम 4-30 से 5 (कन्नड़ा में)
- 'दूरदर्शन चंदना' पर सोम से गुरु शाम 7-30 से 8 तथा शुक्र से रवि दोपहर 4 से 4-30
- 'आस्था हिन्दी' पर हर रोज़ रात 10 से 10-20 (हिन्दी में)

USA - Canada

- 'TV Asia'- पर रोज़ सुबह 7-30 से 8 EST

U K

- 'यीनस' टीवी पर हर रोज़ सुबह 8 से 8-30 GMT (हिन्दी में)
- 'यीनस' टी.वी. पर रोज़ सुबह 8-30 से 9 GMT
- 'MA TV' पर रोज़ शाम 5-30 से 6-30 GMT

Australia

- 'Rishtey' पर हर रोज़ सुबह 8 से 8-30 तथा दोपहर 1-30 से 2 (हिन्दी में)

Fiji - NZ - Singapore - SA - UAE

- 'Rishtey-Asia' पर हर रोज़ सुबह 6 से 6-30 तथा 7-30 से 8 (हिन्दी में)

USA - UK - Africa - Australia

- 'आस्था ग्लोबल' पर सोम से शुक्र रात 10 से 10-30 (डिश टी.वी. चैनल UK-८४९, USA-७१९) (गुजराती और हिन्दी में)

अक्तूबर 2022
वर्ष-17 अंक-12
अखंड क्रमांक - 204

दादावाणी

Date Of Publication On 15th Of Every Month
RNI No. GUJHIN/2005/17258
Reg. No. G-GNR-348/2021-2023
Valid up to 31-12-2023
LPWP Licence No. PMG/NG/036/2021-2023
Valid up to 31-12-2023
Posted at Adalaj Post Office
on 15th of every month.

प्रज्ञा, वह 'स्व' और 'पर' को एकाकार नहीं होने देती

आत्मा से जो पराया है, उसे कभी भी खुद का नहीं मानने दे और खुद का है उसे कभी भी पराया नहीं मानने दे, वह प्रज्ञा है! प्रज्ञा, वह तो आत्मा का एक अंग है और वह निरंतर आत्मा को मुक्ति दिलाने का कार्य ही करती है। जैसे-जैसे प्रज्ञा खिलती जाती है, वैसे-वैसे वर्तन में बदलाव आता जाता है। जब वर्तन बदलता है, तब भार कम लगता है। 'खुद का' और 'पराया', इस प्रकार होम डिपार्टमेन्ट और फॉरेन डिपार्टमेन्ट दोनों को अलग ही रखती है, वही प्रज्ञा है, वही आत्मा है, यानी 'स्व' और 'पर' को एकाकार नहीं होने दे। हम जब ज्ञान देते हैं, उसी समय आपको प्रज्ञाभाव उत्पन्न हो जाता है। सारा संसार जो चल रहा है, वह सब चंचल भाग ही है, जबकि प्रज्ञाभाव वह स्थायी रह सके, ऐसा भाव है।

- दादाश्री

Printed and Published by Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation - Owner. Printed at Amba Offset, B-99, GIDC, Sector-25, Gandhinagar - 382025.